पश्चिम बंगाल सिविल सेवा (कार्यकारी) मुख्य परीक्षा

हिंदी

पत्र-लेखन · प्रतिवेदन · सार-लेखन · गद्यांश · निबंध · अनुवाद

हल प्रश्न-पत्र 2018 – 2023

प्रत्येक प्रश्न का आदर्श उत्तर, परीक्षा की शब्द-सीमा के अनुसार

इस पुस्तक के बारे में

- प्रश्न-पत्र नवीनतम (2023) से पुराने (2018) क्रम में दिए गए हैं।
- हर प्रश्न **नीले बॉक्स** में मूल रूप में दिया गया है। उसके नीचे आदर्श उत्तर है।
- पत्र-लेखन में प्रश्न-पत्र किसी **एक** विषय पर पत्र माँगता है, पर अभ्यास के लिए यहाँ **सभी विषयों** पर पत्र लिखे गए हैं।
- उत्तर प्रश्न-पत्र की शब्द-सीमा में हैं। पत्र लगभग 150 शब्दों में है और प्रतिवेदन लगभग 200 शब्दों में। सार मूल गद्यांश के लगभग एक-तिहाई में है।
- **बैंगनी बॉक्स** में परीक्षा-संकेत हैं, जैसे प्रारूप, भाषा और अंक दिलाने वाली बातें।
- 2023 के द्वितीय प्रश्न-पत्र में हिंदी गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद माँगा गया है, इसलिए केवल वही उत्तर अंग्रेज़ी में है।

विषय-सूची

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2023 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

द्वितीय प्रश्न-पत्र (2023) · हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2022 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न प्रश्न 5 · अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2021 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न प्रश्न 5 · अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2020 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न प्रश्न 5 · अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2019 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न प्रश्न 5 · अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2018 · हिंदी

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन प्रश्न 2 · प्रतिवेदन प्रश्न 3 · सार-लेखन प्रश्न 4 · निबंध प्रश्न 5 · अनुवाद

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2023 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: MWC/I-(B/H/U/N/S)/23 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

टिप्पणी

इस स्कैन में 2023 के प्रथम प्रश्न-पत्र का **प्रश्न 5 (अनुवाद) नहीं है**। स्कैन में इस प्रश्न-पत्र का केवल मुद्रित पृष्ठ (3) है, जिस पर प्रश्न 1 से 4 हैं; प्रश्न 5 वाला पृष्ठ स्कैन में नहीं है, इसलिए उसका उत्तर नहीं दिया गया है। स्कैन के अगले पृष्ठ पर द्वितीय प्रश्न-पत्र (MWC/II/2023) का हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद वाला प्रश्न है; उसे इस प्रश्न-पत्र के अंत में हल किया गया है।

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

किसी एक विषय पर किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए : (अधिकतम 150 शब्दों में।)
[Write a letter in about 150 words (*any one*)] :

(क) साइबर अपराध

(ख) डेंगू का बढ़ता प्रकोप

(ग) चुनाव के दिनों में पोस्टरों से होनेवाली असुविधा

(क) साइबर अपराध

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: तेज़ी से बढ़ते साइबर अपराधों की रोकथाम हेतु।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन और जनता का ध्यान बढ़ते साइबर अपराधों की ओर दिलाना चाहता हूँ।

आज शायद ही कोई दिन जाता हो, जब किसी के ठगे जाने की ख़बर न आए। कभी कोई बैंक-अधिकारी बनकर ओटीपी माँग लेता है, तो कभी नौकरी या इनाम का झाँसा देकर खाता ख़ाली कर देता है। सोशल मीडिया पर नकली प्रोफ़ाइल बनाकर महिलाओं को तंग करने के मामले भी बढ़े हैं। सबसे आसान शिकार बुज़ुर्ग हैं, जिनकी जीवन भर की जमा-पूँजी पल भर में लुट जाती है।

मेरा सुझाव है कि हर थाने में प्रशिक्षित साइबर प्रकोष्ठ हो और शिकायत बिना टाल-मटोल के दर्ज हो। स्कूलों और मोहल्लों में जागरूकता अभियान चलें, ताकि लोग ओटीपी या पिन किसी को न बताएँ और ठगी होते ही साइबर हेल्पलाइन 1930 पर सूचना दें।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर जनहित में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 12 सितंबर 2023

(ख) डेंगू का बढ़ता प्रकोप

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: शहर में डेंगू के बढ़ते प्रकोप की ओर ध्यान दिलाने हेतु।

महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग का ध्यान हमारे इलाक़े में तेज़ी से फैल रहे डेंगू की ओर दिलाना चाहता हूँ।

बरसात के बाद से जगह-जगह पानी भरा है। जाम नालियों, छतों पर पड़े टायरों, गमलों और टूटे बर्तनों में मच्छर पनप रहे हैं। हर दूसरे घर में कोई न कोई बुख़ार से जूझ रहा है। सरकारी अस्पतालों में बिस्तर कम पड़ गए हैं और निजी इलाज का ख़र्च उठाना आम आदमी के बस की बात नहीं। कई परिवार अपने प्रियजनों को खो चुके हैं।

मेरा अनुरोध है कि हर वार्ड में नियमित रूप से मच्छरमार दवा का छिड़काव हो और जमा पानी तुरंत निकाला जाए। मोहल्लों में मुफ़्त जाँच-शिविर लगें और अस्पतालों में डेंगू के मरीज़ों के लिए अलग वार्ड हों। नागरिक भी अपने घर-आँगन में पानी जमा न होने दें।

आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित कर जनहित में योगदान देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 18 सितंबर 2023

(ग) चुनाव के दिनों में पोस्टरों से होनेवाली असुविधा

सेवा में,
संपादक महोदय,

प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: चुनाव के दिनों में पोस्टरों और बैनरों से होने वाली असुविधा के संबंध में।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं निर्वाचन अधिकारियों और राजनीतिक दलों का ध्यान चुनावी पोस्टरों से होने वाली परेशानी की ओर दिलाना चाहता हूँ।

चुनाव की घोषणा होते ही शहर का चेहरा बिगड़ जाता है। घरों की दीवारें, बिजली के खंभे, पेड़, यहाँ तक कि यातायात-संकेत भी पोस्टरों से ढक जाते हैं। मकान-मालिक से पूछे बिना उसकी दीवार पर नारे लिख दिए जाते हैं। सड़कों के आर-पार टँगे बैनर वाहन-चालकों का ध्यान भटकाते हैं और आँधी में उनके गिरने का ख़तरा बना रहता है। चुनाव बीत जाने पर भी फटे पोस्टर और प्लास्टिक के फ़्लेक्स महीनों नालियाँ जाम करते रहते हैं।

मेरा सुझाव है कि प्रचार-सामग्री लगाने की जगहें पहले से तय हों, प्लास्टिक के फ़्लेक्स पर रोक लगे और चुनाव के बाद हर दल अपनी सामग्री ख़ुद हटाए। नियम तोड़ने वालों पर जुर्माना हो।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर जनहित में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 20 अप्रैल 2023

परीक्षा-संकेत

इस प्रश्न-पत्र में नाम-पते के लिए कोई निर्देश नहीं है, फिर भी उत्तर-पुस्तिका में अपनी पहचान न लिखें; नाम और पते की जगह XYZ लिखें। विषय-पंक्ति छोटी और एक ही वाक्य की हो, और पत्र का मुख्य भाग 150 शब्दों के भीतर रहे।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए (Write a report within 200 words):

आधुनिक विकास और बढ़ते वृद्धाश्रम

बुढ़ापे का नया ठिकाना: महानगर में तेज़ी से बढ़ रहे वृद्धाश्रम

कोलकाता, 1 अक्टूबर (निज संवाददाता)। अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर शहर में बुज़ुर्गों के सम्मान में कार्यक्रम हुए, पर एक कड़वी सच्चाई भी सामने आई – महानगर और आसपास वृद्धाश्रमों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

समाजशास्त्रियों के अनुसार इसकी जड़ आधुनिक विकास से बदली जीवन-शैली में है। रोज़गार की तलाश में बेटे-बेटियाँ दूसरे शहरों या विदेश चले जाते हैं। संयुक्त परिवार टूट गए हैं, और छोटे फ़्लैटों तथा भागदौड़ भरी दिनचर्या में बुज़ुर्गों के लिए न जगह बचती है, न समय। कई माता-पिता अकेलेपन से घबराकर ख़ुद आश्रम चुन रहे हैं।

एक वृद्धाश्रम में रह रहे सेवानिवृत्त शिक्षक ने कहा, "यहाँ सुविधाएँ तो हैं, बस पोते-पोतियों की आवाज़ नहीं है।" मनोचिकित्सक बताते हैं कि अकेलापन बुज़ुर्गों में अवसाद और कई बीमारियाँ पैदा करता है।

माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007 संतान को माता-पिता की देखभाल के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है, पर जानकारों के मुताबिक़ अकेले क़ानून से बात नहीं बनेगी। ज़रूरत है कि मोहल्लों में देखभाल-केंद्र खुलें, स्वास्थ्य सेवाएँ बुज़ुर्गों की पहुँच में हों और परिवारों में आपसी बातचीत बनी रहे।

विकास की दौड़ में अगर बुज़ुर्ग ही पीछे छूट जाएँ, तो वह विकास अधूरा है।

परीक्षा-संकेत

"संपादकीय प्रतिवेदन" में केवल समस्या न गिनाएँ; कारण, असर, विशेषज्ञों की राय और समाधान, चारों दिखाएँ। शीर्षक और "कोलकाता, तिथि (निज संवाददाता)" वाली पंक्ति अवश्य लिखें।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए (Write a précis of the following passage in Hindi):

इस बहुरंगी संसार में भाँति-भाँति के लोग रहते हैं। उन सबमें समानता नहीं होती है। कुछ स्वार्थी होते हैं तो कुछ परमार्थी, कुछ लालची तो कुछ लालच रहित, परन्तु हमारे लिए यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा व्यक्ति स्वार्थी है। वह दिखने में तो एक सामान्य व्यक्ति की ही तरह दिखाई देता है। उसकी कोई अलग विशिष्ट पहचान नहीं होती। जब तक उस व्यक्ति से हमारा कोई काम न पड़े और यह सिद्ध न हो जाए कि वह स्वार्थी है तब तक उसकी पहचान नहीं होती है। लालची लोगों को बगैर उनके व्यवहार से परिचित हुए पहचानना अत्यंत मुश्किल कार्य है। स्वार्थ और लालच किसी व्यक्ति के दुर्गुण हैं। अतः बाहर से देखकर इसकी पहचान नहीं की जा सकती। इसकी पहचान तो केवल व्यक्ति के व्यवहार द्वारा ही संभव है। स्वार्थी और लालची लोगों के न तो सींग हुआ करते हैं और न ही कोई ख़ास किस्म का झंडा-पताका।

शीर्षक: व्यवहार ही असली पहचान

संसार में तरह-तरह के लोग हैं, पर स्वार्थी या लालची व्यक्ति को पहचानना कठिन है, क्योंकि बाहर से वह आम आदमी जैसा ही दिखता है। स्वार्थ और लालच मन के दुर्गुण हैं, जिनका कोई बाहरी चिह्न नहीं होता। काम पड़ने पर ही ऐसे व्यक्ति की असलियत खुलती है। अतः मनुष्य की सच्ची पहचान उसके व्यवहार से ही होती है।

(मूल गद्यांश: लगभग 150 शब्द; सार: लगभग 60 शब्द)

परीक्षा-संकेत

"सींग" और "झंडा-पताका" वाली बात मुहावरेदार उदाहरण है; सार में उसे न दोहराएँ, केवल उसका भाव ("कोई बाहरी चिह्न नहीं होता") रखें।

प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 10×4=40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए (Read the following text carefully and write the answers of the questions):

विज्ञान के अद्भुत चमत्कारों में से एक है कंप्यूटर और कंप्यूटर में प्राप्त इंटरनेट की सुविधा तो अद्भुत है। इसने आज पूरे संसार को एक सूत्र में बाँध रखा है। **इंटरनेट की सुविधा ने ज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति ला दी है।** आज किसी भी व्यक्ति को दुनिया के किसी भी कोने की कोई भी जानकारी चाहिए तो उसे इंटरनेट पर सहज ही प्राप्त हो जाती है। इंटरनेट आज मनोरंजन और ज्ञान विस्तार का सबसे अच्छा साधन बन गया है। इन सभी सुविधाओं के साथ-साथ इससे फैलने वाली कुछ बुराईयाँ भी आज विस्तार पा रही हैं। इसका दुरुपयोग करने वाले भी कम नहीं हैं। आज इंटरनेट का सही प्रयोग वरदान और गलत प्रयोग अभिशाप बनता जा रहा है। अब यह मनुष्य को सोचना है कि वह चाहता क्या है?

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) इंटरनेट के सही और गलत प्रयोग पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।

(ग) रेखांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(मोटे अक्षरों वाली पंक्ति मूल प्रश्न-पत्र में रेखांकित है।)

टिप्पणी

मूल में रेखांकित वाक्य में "सुविधा नें" छपा है; छपाई की इस भूल को "सुविधा ने" कर दिया गया है। "बुराईयाँ" और "दुरुपयोग" जैसे शब्द मूल के अनुसार ही रखे गए हैं।

(क) शीर्षक

उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

शीर्षक: इंटरनेट: वरदान भी, अभिशाप भी

यह शीर्षक उपयुक्त है, क्योंकि गद्यांश इंटरनेट से मिलने वाले ज्ञान और मनोरंजन के लाभ भी गिनाता है और उसके दुरुपयोग से फैलती बुराइयों से सावधान भी करता है। उसका निष्कर्ष यही है कि सही प्रयोग वरदान है और ग़लत प्रयोग अभिशाप।

(ख) इंटरनेट का सही और ग़लत प्रयोग

इंटरनेट के सही और गलत प्रयोग पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।

इंटरनेट अपने आप में न अच्छा है, न बुरा; सब कुछ इस पर निर्भर है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं। सही ढंग से इस्तेमाल हो तो यह ज्ञान का खुला भंडार है। गाँव में बैठा विद्यार्थी भी देश के अच्छे शिक्षकों से पढ़ सकता है, किसान मौसम और मंडी के भाव जान लेता है, और कई सरकारी काम घर बैठे हो जाते हैं। दूसरी ओर, इसी के सहारे साइबर ठगी होती है और अश्लीलता, अफ़वाहें तथा नफ़रत फैलाई जाती हैं। बच्चों और युवाओं को मोबाइल की लत लग रही है। मेरे विचार से इंटरनेट पर रोक लगाना कोई हल नहीं।

ज़रूरत इस बात की है कि हम इसे संयम और विवेक से बरतें और साइबर क़ानूनों का सख़्ती से पालन हो। तभी यह सचमुच वरदान बनेगा।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

रेखांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

गद्यांश में यह पंक्ति रेखांकित है: "इंटरनेट की सुविधा ने ज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति ला दी है।"

लेखक कहना चाहता है कि इंटरनेट ने ज्ञान पाने का तरीक़ा ही बदल दिया है। पहले किसी विषय की जानकारी के लिए पुस्तकालयों और विशेषज्ञों के चक्कर लगाने पड़ते थे, और यह सुविधा गिने-चुने लोगों को ही मिलती थी। आज मामूली ख़र्च पर दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी पल भर में सामने आ जाती है। ज्ञान अब कुछ लोगों तक सीमित नहीं रहा, सबकी पहुँच में आ गया है। इतने बड़े और तेज़ बदलाव को ही लेखक "क्रांति" कहता है।

(घ) सारांश

उपर्युक्त गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

कंप्यूटर और इंटरनेट विज्ञान के अद्भुत चमत्कार हैं। इंटरनेट ने संसार को जोड़कर हर जानकारी सुलभ कर दी है और यह ज्ञान तथा मनोरंजन का सबसे अच्छा साधन बन गया है। पर इसके दुरुपयोग से बुराइयाँ भी फैल रही हैं। सही प्रयोग वरदान है, ग़लत प्रयोग अभिशाप; चुनाव मनुष्य के हाथ में है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रश्न में "रेखांकित पंक्तियों" लिखा है, पर गद्यांश में एक ही वाक्य रेखांकित है। आशय लिखते समय पहले पंक्ति उद्धृत करें, फिर प्रसंग के साथ उसका भाव समझाएँ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (2023) · हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद

प्रश्न-पत्र कोड: MWC/II/2023 (द्वितीय प्रश्न-पत्र, उन परीक्षार्थियों के लिए जिन्होंने प्रथम प्रश्न-पत्र में बांग्ला के स्थान पर हिंदी ली है)

प्रश्न 40 अंक

Translate the Hindi passage into English (*any one*):
(Who opted Hindi in lieu of Bengali for Paper-I)

(a) अनुशासन की आवश्यकता हर स्थान पर और हर क्षेत्र में है। व्यक्ति के निजी जीवन, सामाजिक जीवन और राष्ट्रीय जीवन सबमें इसका बड़ा महत्व है। जिस व्यक्ति के निजी जीवन में अनुशासन का अभाव होगा, उसे बार-बार विषम स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति प्रायः अपने लक्ष्यों को पूरा कर पाने में असमर्थ रहेगा। समाज में भी ऐसे व्यक्ति को प्रतिष्ठा नहीं मिल पाती। अनुशासनहीन व्यक्ति अपने समाज की उन्नति में कोई योगदान नहीं कर सकता। वह समाज की प्रगति में बाधा और समाज के लिए बोझ भी बन सकता है। राष्ट्रीय जीवन में तो अनुशासन का सर्वाधिक महत्व है। जिस राष्ट्र के नागरिकों में अनुशासन होता है, वे बड़े-से-बड़े संकट को भी स्वाभिमान के साथ झेल लेते हैं। अनुशासनहीन नागरिकों वाला राष्ट्र एक अनियन्त्रित भीड़ जैसा होता है, जो कब कैसा आचरण करेगा, कोई नहीं बता सकता। व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र की इकाई है। अतः जैसे व्यक्ति होंगे, वैसा ही उनका समाज और राष्ट्र होगा। किसी राष्ट्र या समाज के चरित्र का अध्ययन उसके नागरिकों को देखकर किया जा सकता है।

(b) राष्ट्रीय विकास परिषद् ने देश के किसानों और कारखानों में कार्य करने वाले मजदूरों से चतुर्थ पंचवर्षीय योजना को सफल बनाने में अधिक-से-अधिक सहयोग देने की अपील की है। देशवासियों के अनुशासित सहयोग और उनकी कर्तव्यपरायणता से योजना की विभिन्न मदों को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है। समाज के सभी वर्गों को इसके लिए सहयोग देना चाहिए। समाज में जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हैं, उन लोगों से परिषद की ओर से कहा गया है कि उन्हें अपने व्यय पर संयम रखना चाहिए और अपने धन की बर्बादी को रोकना चाहिए तथा अपने व्ययों को कम करने का प्रयत्न करना चाहिए। सभी देशवासियों को राष्ट्र और समाज के हितों की ओर अपने संकुचित हितों की अपेक्षा अधिक ध्यान देना चाहिए और ऐसा करने से वे निजी और राष्ट्र दोनों प्रकार के हितों को सुरक्षित करने में सफल हो सकेंगे। इस समय देश की जो स्थिति है, उससे देश की सुरक्षा की व्यवस्था का महत्व और भी बढ़ गया है। राष्ट्रीय योजना के सभी कार्यों को उक्त दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

टिप्पणी

स्कैन में गद्यांश (b) एक मुद्रित पृष्ठ के अंत में टूटकर अगले पृष्ठ (3) के ऊपर पूरा होता है; यहाँ उसे एक साथ दिया गया है। केवल छपाई की ये स्पष्ट भूलें सुधारी गई हैं – (a) में: "आबश्यकता" → "आवश्यकता", "औरहर" → "और हर", "राश्ट्रीय" → "राष्ट्रीय" (पहली पंक्ति), "पुरा" → "पूरा", "काब" → "कब"; (b) में: "मजदुरों" → "मजदूरों", "सफलतापुर्नक" → "सफलतापूर्वक", "पुरा" → "पूरा", "आपने व्ययों" → "अपने व्ययों"। बाक़ी पाठ, जैसे "परिषद्"/"परिषद", "अनियन्त्रित" और "आर्थिक स्थिति अच्छी हैं", मूल के अनुसार ही है।

(a) अनुशासन

अंग्रेज़ी अनुवाद (English translation):

Discipline is needed everywhere and in every sphere of life. It is of great importance in every part of a person's life – private, social and national. A person whose private life lacks discipline will have to face difficult situations again and again. Such a person will often be unable to achieve his goals. Nor does he earn respect in society. An undisciplined person can make no contribution to the advancement of his society; he may even become an obstacle to its progress

and a burden on it. In national life, discipline matters most of all. When a nation's citizens are disciplined, they face even the gravest crisis with their self-respect intact. A nation of undisciplined citizens is like an unruly mob: no one can tell how it will behave, or when. The individual is the basic unit of society and the nation. Hence, as the individuals are, so will their society and their nation be. The character of a nation or a society can be studied by observing its citizens.

(b) राष्ट्रीय विकास परिषद् की अपील

अंग्रेज़ी अनुवाद (English translation):

The National Development Council has appealed to the country's farmers and factory workers to extend the fullest possible cooperation in making the Fourth Five-Year Plan a success. With the disciplined cooperation and sense of duty of the people, the various items of the Plan can be completed successfully. All sections of society should lend their support to this effort. The Council has urged those who are well off to exercise restraint in their spending, to stop wasting their money and to try to cut down their expenses. All citizens should pay more attention to the interests of the nation and society than to their own narrow interests; by doing so, they will be able to safeguard both their personal interests and those of the nation. The country's present situation has made its security arrangements all the more important. All the work under the national Plan should be viewed in this light.

> **परीक्षा-संकेत**
>
> अनुवाद शब्द-प्रति-शब्द नहीं, भाव के अनुसार करें: "स्वाभिमान के साथ झेल लेते हैं" → *face … with their self-respect intact*, "अनियन्त्रित भीड़" → *an unruly mob*, "योजना की विभिन्न मदें" → *the various items of the Plan*। काल पर ध्यान दें: "अपील की है" → *has appealed*, "कहा गया है" → *has urged*।

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2022 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: CSM(C)-I(B/H/U/N/S)/22 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

किसी एक विषय पर किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए : (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पता के स्थान पर XYZ लिखें)

[Write a letter in about 150 words (*any one*)(Write XYZ for Name and Address)] :

(क) शिक्षा में मातृभाषा का महत्व

(ख) पर्यावरण संरक्षण

(ग) 'चंद्रयान-3' का उद्देश्य

(क) शिक्षा में मातृभाषा का महत्व

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: शिक्षा में मातृभाषा के महत्व पर विचार।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं शिक्षा में मातृभाषा के महत्व पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

बच्चा सबसे पहले अपनी माँ की बोली में सोचना-समझना सीखता है। उसी भाषा में पढ़ाया जाए तो विषय सहज ही मन में उतर जाता है और रटना नहीं पड़ता। इसके उलट, शुरू से ही पराई भाषा का बोझ उसकी जिज्ञासा और आत्मविश्वास, दोनों को दबा देता है। रवींद्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी, दोनों मातृभाषा में शिक्षा के पक्षधर थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी कम से कम पाँचवीं कक्षा तक घर की भाषा में पढ़ाने पर ज़ोर देती है।

मेरा सुझाव है कि प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई मातृभाषा में हो और इसके लिए अच्छी पाठ्य-पुस्तकें तैयार हों। अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाएँ विषय के रूप में अवश्य सिखाई जाएँ, ताकि बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रहकर दुनिया से भी क़दम मिला सकें।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ

पता: XYZ
दिनांक: 21 फ़रवरी 2023

(ख) पर्यावरण संरक्षण

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता के संबंध में।

महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं पर्यावरण की बिगड़ती हालत की ओर प्रशासन और नागरिकों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

हमारे महानगर में विकास के नाम पर पेड़ धड़ल्ले से काटे जा रहे हैं और तालाब पाटकर इमारतें खड़ी की जा रही हैं। गाड़ियों का धुआँ, जगह-जगह जलता कूड़ा और नालियों में अटका प्लास्टिक हवा और पानी, दोनों को ज़हरीला बना रहे हैं। सर्दियों में शहर पर धुएँ और धुंध की चादर छा जाती है और साँस के रोगी बढ़ते जा रहे हैं।

मेरा सुझाव है कि हर कटे पेड़ के बदले कई पौधे लगाना और उन्हें पालना अनिवार्य हो। तालाबों और आर्द्रभूमियों पर अवैध क़ब्ज़ा रुके, एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक पर लगी रोक सख़्ती से लागू हो और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिले। हम नागरिक भी गीला-सूखा कूड़ा अलग रखें और बिजली-पानी बचाएँ।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर जनहित में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 5 जून 2023

(ग) 'चंद्रयान-3' का उद्देश्य

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: 'चंद्रयान-3' के उद्देश्य पर एक नागरिक के विचार।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं 'चंद्रयान-3' अभियान के उद्देश्य और महत्व पर अपने विचार पाठकों तक पहुँचाना चाहता हूँ।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने इस अभियान के तीन मुख्य उद्देश्य तय किए थे – चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और धीरे से उतरना (सॉफ़्ट लैंडिंग), वहाँ रोवर चलाकर दिखाना और वहीं वैज्ञानिक प्रयोग करना। 2019 में चंद्रयान-2 का लैंडर अंतिम क्षणों में विफल हो गया था; उससे सीख लेकर इस बार प्रणाली को और मज़बूत बनाया गया। 23 अगस्त 2023 को विक्रम लैंडर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरा। वहाँ पहुँचने वाला भारत पहला देश है। प्रज्ञान रोवर ने वहाँ गंधक की मौजूदगी की पुष्टि भी की है। इस तरह तीनों उद्देश्य पूरे हुए।

इस सफलता ने दिखा दिया कि सीमित ख़र्च में भी विश्व-स्तरीय विज्ञान संभव है। इससे युवाओं में विज्ञान के प्रति नया उत्साह जगा है।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 5 सितंबर 2023

परीक्षा-संकेत

मातृभाषा या चंद्रयान-3 जैसे विचार-प्रधान विषयों पर भी संपादक को लिखे पत्र का पूरा ढाँचा रखें: भूमिका, मुख्य विचार, सुझाव और प्रकाशन का अनुरोध। चंद्रयान-3 पर प्रश्न "उद्देश्य" पूछता है, इसलिए इसरो के तीनों उद्देश्य साफ़-साफ़ गिनाएँ, और वही तथ्य लिखें जो पत्र की तिथि तक सामने आ चुके हों।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए (Write a report within 200 words):

स्वस्थ नगर योजना और गैर कानूनी निर्माण

अवैध निर्माण के बोझ तले शहर, स्वस्थ नगर योजना पर उठे सवाल

कोलकाता, 20 मार्च (निज संवाददाता)। महानगर और आसपास बिना नक्शा पास कराए मकान बनाने और स्वीकृत नक्शे से ज़्यादा मंज़िलें खड़ी करने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। तालाबों और आर्द्रभूमियों को पाटकर, यहाँ तक कि नालों के ऊपर भी, इमारतें बन रही हैं।

नगर-नियोजन विशेषज्ञों के अनुसार स्वस्थ शहर के लिए खुली जगह, चौड़ी सड़कें, पानी की निकासी और हरियाली सबसे ज़रूरी हैं, और अवैध निर्माण इन्हीं को निगल रहा है। तंग गलियों में आग लगने पर दमकल की गाड़ियाँ भीतर नहीं पहुँच पातीं। कमज़ोर इमारतों के ढहने का डर बना रहता है, और थोड़ी-सी बारिश में कई मोहल्ले डूब जाते हैं।

निवासियों का आरोप है कि यह सब प्रमोटरों और निगम के कुछ कर्मचारियों की मिलीभगत से हो रहा है। निगम के एक अधिकारी के अनुसार अवैध ढाँचों का सर्वेक्षण चल रहा है और नोटिस भेजे जा रहे हैं।

जानकारों की राय है कि नक्शा पास करने की प्रक्रिया पारदर्शी हो, उपग्रह-चित्रों से निगरानी हो, दोषी अधिकारियों पर भी कार्रवाई हो और लोग फ़्लैट ख़रीदने से पहले स्वीकृत नक्शा ज़रूर देखें।

सुरक्षित और योजनाबद्ध शहर तभी बनेगा, जब प्रशासन और नागरिक दोनों क़ानून का सम्मान करें।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन में विषय के दोनों हिस्से जोड़कर लिखें: स्वस्थ नगर योजना क्या माँगती है और अवैध निर्माण उसे कैसे बिगाड़ता है। सटीक आँकड़े गढ़ने के बजाय "कई", "लगातार" जैसे शब्दों से स्थिति बताएँ।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए (Write a précis of the following passage in Hindi)(use special Précis sheet provided for the purpose):

आज विश्व अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा है। पिछले कुछ दशकों से जिस समस्या ने विश्व को सर्वाधिक प्रभावित किया है, भयभीत किया है, वह है आतंकवाद। आज विश्व के प्रमुख देश – अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, भारत इत्यादि इसकी चपेट में हैं। इन देशों में समाचार पत्र आतंकवाद की घटनाओं से भरे रहते हैं। रेलगाड़ी में विस्फोट, आतंकवादियों द्वारा लोगों की हत्या, सीमा पार से आतंकवादियों की घुसपैठ, आतंकवादियों और सेना की झड़प, आतंकवादियों द्वारा राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों पर हमलों की धमकी आदि की सुर्खियों से समाचार पत्र रंगे दिखाई पड़ते हैं। आतंकवाद आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों की प्रगति के साथ-साथ जैसे-जैसे दुनिया सिकुड़ती जा रही है, आतंकवादियों, हथियारों और धन का राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार जाना भी सरल होता जा रहा है। आतंकवादी निरीह लोगों की हत्या करके, सार्वजनिक स्थलों पर बम विस्फोट करके, सरकारी संपत्ति को हानि पहुँचाकर, तोड़-फोड़ की घटनाओं को अंजाम देकर समाज में आतंक फैलाने का प्रयास करते हैं।

टिप्पणी

मूल में "जैसे-जैसें" छपा है; छपाई की इस भूल को "जैसे-जैसे" कर दिया गया है।

शीर्षक: आतंकवाद: विश्व की सबसे बड़ी चुनौती

पिछले कुछ दशकों में आतंकवाद विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन गया है। बड़े-बड़े देश इसकी चपेट में हैं और समाचार-पत्र आतंकी हिंसा की ख़बरों से भरे रहते हैं। प्रौद्योगिकी और संचार की प्रगति ने आतंकवादियों के लिए हथियार और पैसा सीमा-पार पहुँचाना आसान कर दिया है। निर्दोषों की हत्या और तोड़-फोड़ से वे समाज में दहशत फैलाते हैं।

(मूल गद्यांश: लगभग 160 शब्द; सार: लगभग 60 शब्द)

परीक्षा-संकेत

रेलगाड़ी में विस्फोट, घुसपैठ, झड़प जैसी घटनाओं की सूची और देशों के नाम उदाहरण हैं; सार में उन्हें "आतंकी हिंसा" और "बड़े-बड़े देश" जैसे एक-दो शब्दों में समेट दें।

प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 10×4=40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जरूरत है प्रदूषण रहित टेक्नालाजी की। विज्ञान और टेक्नालाजी तो आज के युग के अभिन्न अंग हैं जिनसे अलग हो पाना कोरी कल्पना की बात है। उद्योगों का विकल्प भला क्या होगा? हाँ, हम उद्योगों में ऐसी टेक्नालाजी विकसित करें जो प्रदूषण-रहित हो, अर्थात् औद्योगिक कचरे का विनाश ऐसे ढंग से हो कि वह वायु अथवा जल को प्रदूषित न कर सके।

वन हमारे रक्षक हैं। इनमें भू-क्षरण तथा भू-स्खलन और बाढ़ें रुकती हैं। ये शोर-प्रदूषण भी कम करते हैं। फैक्टरियों या प्रयोगशालाओं के आसपास वृक्ष रोपे जाने चाहिए ताकि शोर की मात्रा कुछ तो कम हो। इस प्रकार वन-रोपण को सामाजिक वानिकी का महत्वपूर्ण अंग मानना चाहिए और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) प्रदूषण रहित टेक्नालाजी क्यों आवश्यक है?

(ग) 'वन हमारे रक्षक हैं।' – इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी

मूल में "बाढ़े" छपा है; छपाई की इस भूल को "बाढ़ें" कर दिया गया है।

(क) शीर्षक

उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

शीर्षक: प्रदूषण-मुक्त विकास: स्वच्छ प्रौद्योगिकी और वन

यह शीर्षक उपयुक्त है, क्योंकि गद्यांश के दोनों अनुच्छेद एक ही लक्ष्य की बात करते हैं – विकास बना रहे पर प्रदूषण न बढ़े। पहला अनुच्छेद उद्योगों में प्रदूषण-रहित प्रौद्योगिकी की ज़रूरत बताता है, तो दूसरा वनों को हमारा रक्षक मानता है।

(ख) प्रदूषण रहित प्रौद्योगिकी की आवश्यकता

प्रदूषण रहित टेक्नालाजी क्यों आवश्यक है?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आज के जीवन में इस तरह घुल-मिल गए हैं कि उनसे अलग होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उद्योग बंद कर देना भी कोई हल नहीं, क्योंकि रोज़गार, उत्पादन और देश की प्रगति उन्हीं पर टिकी है। दूसरी ओर, कारख़ानों से निकलता धुआँ, रसायन और कचरा हवा, नदियों और मिट्टी को ज़हरीला बना रहा है। इसका सीधा असर लोगों के स्वास्थ्य, खेती और पूरे जीव-जगत पर पड़ता है। इसलिए रास्ता यही है कि उद्योगों में ऐसी प्रौद्योगिकी अपनाई जाए जो औद्योगिक कचरे को इस तरह नष्ट या शोधित करे कि वायु और जल दूषित न हों। तभी विकास और पर्यावरण साथ-साथ चल सकेंगे।

(ग) 'वन हमारे रक्षक हैं।'

'वन हमारे रक्षक हैं।' – इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

इस वाक्य में लेखक वनों को ऐसा रक्षक बताता है जो बिना कुछ माँगे हमें अनेक संकटों से बचाता है। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं, जिससे भू-क्षरण और भू-स्खलन रुकते हैं। वन वर्षा का पानी सोखकर बाढ़ का वेग घटाते हैं। घने पेड़ शोर को भी काफ़ी हद तक रोक लेते हैं, इसलिए कारख़ानों और प्रयोगशालाओं के आसपास उन्हें लगाना लाभदायक है। आशय यह है कि वनों को बचाना वास्तव में अपनी ही रक्षा करना है।

(घ) सारांश

उपर्युक्त गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

आज उद्योगों के बिना काम नहीं चल सकता, इसलिए ऐसी प्रौद्योगिकी चाहिए जो हवा और पानी को दूषित न करे। वन भू-क्षरण, भू-स्खलन, बाढ़ और शोर से हमारी रक्षा करते हैं। अतः वृक्षारोपण को सामाजिक वानिकी का अंग मानकर राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाना चाहिए।

परीक्षा-संकेत

"क्यों आवश्यक है" जैसे प्रश्न में गद्यांश के तर्क (उद्योगों का विकल्प नहीं, पर प्रदूषण घातक है) को अपने शब्दों में आगे बढ़ाएँ। आशय वाले प्रश्न में वाक्य का प्रसंग और उसका गहरा भाव, दोनों लिखें।

प्रश्न 5 · अनुवाद

प्रश्न 40 अंक

हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi) :

It is very interesting to study the coming of the Aryans to India. You can find out a lot about them from our Sanskrit books. Some of these like the Vedas, must have been written about the time. The oldest Veda is the Rig Veda and you can form some idea from it of the past of India which the Aryans occupied then.

टिप्पणी

स्कैन का पृष्ठ "...Aryans occupied then." पर, ठीक नीचे के किनारे पर, समाप्त हो जाता है और 2022 का आगे का कोई पृष्ठ स्कैन में नहीं है। वाक्य पूरा है, इसलिए गद्यांश यहीं तक माना गया है; यदि मूल प्रश्न-पत्र में वह आगे जारी था, तो वह अंश स्कैन में नहीं है।

भारत में आर्यों के आगमन का अध्ययन बड़ा रोचक है। अपने संस्कृत ग्रंथों से हम उनके बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं। इनमें से कुछ ग्रंथ, जैसे वेद, लगभग उसी समय रचे गए होंगे। सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है। उससे हम उस दौर के भारत का कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं, जहाँ तब आर्य बस चुके थे।

परीक्षा-संकेत

"must have been written" में अनुमान का भाव है, इसलिए "रचे गए होंगे" लिखा गया है। सामान्य कथन वाले "you can find out" को "हम जान सकते हैं" लिखना हिंदी में अधिक स्वाभाविक है। "the past of India which the Aryans occupied then" को "उस दौर के भारत ..., जहाँ तब आर्य बस चुके थे" लिखा गया है, ताकि वाक्य हिंदी में सहज लगे।

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2021 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: BMW(C)-I(B,H,U,N,S)/21 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी हिंदी समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में) (Write a letter within 150 words):

(नाम पता के स्थान पर XYZ)

(क) मूल्य-वृद्धि की समस्या

(ख) जल-संरक्षण

(ग) भारत में धर्मनिरपेक्षता

(क) मूल्य-वृद्धि की समस्या

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: लगातार बढ़ती महँगाई की समस्या पर विचार।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं दिनोंदिन बढ़ती महँगाई पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

आज हालत यह है कि दाल, सब्ज़ी, खाने के तेल और रसोई गैस के दाम लगभग हर महीने बढ़ जाते हैं। पेट्रोल-डीज़ल के दाम चढ़ते ही माल-ढुलाई का ख़र्च बढ़ता है और उसका असर हर चीज़ की क़ीमत पर पड़ता है। आमदनी उस रफ़्तार से नहीं बढ़ती, इसलिए मध्यम वर्ग और ग़रीब परिवारों का घरेलू बजट बिगड़ गया है। कई घरों में बच्चों की पढ़ाई और इलाज तक में कटौती हो रही है।

सरकार को चाहिए कि जमाख़ोरी और कालाबाज़ारी पर सख़्ती से रोक लगाए, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मज़बूत करे और ज़रूरी चीज़ों के दामों पर लगातार नज़र रखे। अनाज के भंडारण की व्यवस्था भी सुधरनी चाहिए।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर सरकार का ध्यान इस समस्या की ओर दिलाएँगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ

पता: XYZ
दिनांक: 12 अगस्त 2021

(ख) जल-संरक्षण

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात खबर,
कोलकाता।

विषय: जल-संरक्षण की आवश्यकता पर विचार।

महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के ज़रिए मैं पाठकों और प्रशासन का ध्यान जल-संरक्षण की ओर दिलाना चाहता हूँ।

जल ही जीवन है, फिर भी हम इसे बेरहमी से बर्बाद करते हैं। घरों में नल खुले छूट जाते हैं, पाइपलाइनें रिसती रहती हैं और पुराने तालाबों को पाटकर इमारतें खड़ी की जा रही हैं। ऊपर से नलकूपों से ज़मीन का पानी बेहिसाब खींचा जा रहा है, जिससे भूजल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है। गर्मी आते ही कई मोहल्लों में पीने के पानी के लिए लंबी क़तारें लग जाती हैं।

मेरा सुझाव है कि हर नए भवन में वर्षा-जल संचयन अनिवार्य हो और पुराने तालाबों का जीर्णोद्धार हो। खेती में टपक सिंचाई को बढ़ावा मिले और बचपन से ही बच्चों में पानी बचाने की आदत डाली जाए। छोटी-छोटी सावधानियों से हम नागरिक भी बहुत पानी बचा सकते हैं।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर जन-जागरण में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 12 अगस्त 2021

(ग) भारत में धर्मनिरपेक्षता

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: भारत में धर्मनिरपेक्षता के महत्त्व पर विचार।

महोदय,
आपके सम्मानित समाचार-पत्र में मैं भारत की धर्मनिरपेक्ष परंपरा पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

भारत अनेक धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का देश है। संविधान ने राज्य को किसी एक धर्म से नहीं बाँधा और हर नागरिक को अपनी आस्था के अनुसार जीने की आज़ादी दी। भारतीय धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म का विरोध नहीं, बल्कि सभी धर्मों के प्रति समान आदर है। "सर्वधर्म समभाव" की यही भावना हमारी एकता की नींव है।

दुख की बात है कि कुछ लोग वोट की राजनीति के लिए धार्मिक भावनाएँ भड़काते हैं और सोशल मीडिया पर फैलती अफ़वाहें आपसी भरोसे को कमज़ोर करती हैं।

मेरा मानना है कि स्कूलों से ही बच्चों में सहनशीलता और आपसी सम्मान के संस्कार डाले जाएँ, नफ़रत फैलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई हो और सब समुदाय एक-दूसरे के त्योहारों में शामिल हों। तभी हमारा लोकतंत्र मज़बूत रहेगा।

आशा है, आप मेरे इन विचारों को स्थान देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 12 अगस्त 2021

परीक्षा-संकेत

प्रश्न में "अपने विचार व्यक्त करते हुए" पत्र लिखने को कहा गया है, इसलिए केवल शिकायत न करें; समस्या, उसके कारण और अपनी राय के साथ ठोस सुझाव भी दें। पत्र का मुख्य भाग 150 शब्दों के भीतर रखें।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए (Write a report within 200 words):

साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिका।

सोशल मीडिया बना साइबर ठगों का अड्डा, जागरूकता ही बचाव

कोलकाता, 14 सितंबर (निज संवाददाता)। स्मार्टफ़ोन और सस्ते इंटरनेट के साथ शहर में साइबर अपराध तेज़ी से बढ़े हैं और इनमें सबसे बड़ा हाथ सोशल मीडिया का है। साइबर थानों में रोज़ ऐसी शिकायतें पहुँच रही हैं जिनमें ठगी किसी फ़ेसबुक संदेश, व्हाट्सऐप लिंक या फ़र्ज़ी प्रोफ़ाइल से शुरू हुई।

पुलिस के अनुसार अपराधी नौकरी, लॉटरी या सस्ते सामान का लालच देकर लोगों से बैंक की जानकारी और ओटीपी हथिया लेते हैं। फ़र्ज़ी खाते बनाकर महिलाओं को परेशान करने, तस्वीरों से छेड़छाड़ कर ब्लैकमेल करने और अफ़वाहें फैलाकर तनाव भड़काने की घटनाएँ भी बढ़ी हैं। बुज़ुर्ग और किशोर इनके सबसे आसान शिकार हैं।

दूसरी ओर, इन्हीं मंचों पर पुलिस की चेतावनियाँ पढ़कर कई लोग समय रहते ठगी से बच गए हैं।

विशेषज्ञों की सलाह है कि अनजान लिंक न खोलें, ओटीपी किसी को न बताएँ, निजी जानकारी सार्वजनिक न करें और ठगी होते ही साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत करें। उनकी माँग है कि सोशल मीडिया कंपनियों की जवाबदेही तय हो और साइबर थानों को अधिक संसाधन मिलें।

साफ़ है कि सोशल मीडिया दोधारी तलवार है; इसकी धार से बचने का सबसे भरोसेमंद उपाय सावधानी ही है।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन में शीर्षक, स्थान-तिथि वाली पंक्ति और "निज संवाददाता" लिखना न भूलें। विषय के दोनों पहलू दिखाएँ: सोशल मीडिया अपराध का साधन भी है और बचाव का माध्यम भी।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए (Write a prècis of the following passage in Hindi and use special sheet provided for the purpose):

सभ्यता की वृद्धि के साथ-साथ ज्यों-ज्यों मनुष्य के व्यापार बहुरूपी और जटिल होते गए त्यों-त्यों उनके मूल रूप बहुत कुछ आच्छन्न होते गए। भावों के आदिम और सीधे लक्ष्यों के अतिरिक्त और-और लक्ष्यों की स्थापना होती गई, वासनाजन्य मूल व्यापारों के सिवा बुद्धि-द्वारा निश्चित व्यापारों का विधान बढ़ता गया। इस प्रकार बहुत से ऐसे व्यापारों से मनुष्य घिरता गया जिनके साथ उसके भावों का सीधा लगाव नहीं। जैसे आदि में भय का लक्ष्य अपने शरीर और अपनी सन्तति ही की रक्षा तक था; पर पीछे गाय, बैल, अन्न आदि की रक्षा आवश्यक हुई, यहाँ तक कि होते-होते धन, मान, अधिकार, प्रभुत्व इत्यादि अनेक बातों की रक्षा की चिन्ता ने घर किया और रक्षा के उपाय भी वासनाजन्य प्रवृत्ति से भिन्न प्रकार के होने लगे। इसी प्रकार क्रोध, घृणा, लोभ आदि अन्य भावों के विषय भी अपने मूल रूपों से भिन्न रूप धारण करने लगे। कुछ भावों के विषय तो अमूर्त तक होने लगे, जैसे कीर्ति की लालसा। ऐसे भावों को ही बौद्ध-दर्शन में 'अरूपराग' कहते हैं।

शीर्षक: सभ्यता के साथ बदलते भाव

सभ्यता बढ़ने के साथ मनुष्य के कार्य जितने विविध और जटिल होते गए, उनका मूल रूप उतना ही धुँधला पड़ता गया। भावों के सहज लक्ष्यों के साथ बुद्धि से तय ऐसे अनेक लक्ष्य और कार्य जुड़ गए, जिनसे हृदय का सीधा लगाव नहीं था। भावों के विषय भी बदलते-बदलते अमूर्त तक हो गए; ऐसे भावों को बौद्ध-दर्शन 'अरूपराग' कहता है।

(मूल गद्यांश: लगभग 166 शब्द; सार: लगभग 60 शब्द)

परीक्षा-संकेत

इस गद्यांश में "व्यापार" का अर्थ लेन-देन या व्यवसाय नहीं, बल्कि मनुष्य के क्रिया-कलाप है। सार में गाय-बैल या कीर्ति जैसे उदाहरण छोड़ दें, केवल मूल विचार रखें।

प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 10×4=40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश का पाठ कर उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

"राष्ट्र निर्माण में केवल पुरुषों की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं होती बल्कि नारियाँ भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण में सहायक होती हैं। महारानी लक्ष्मीबाई को कौन नहीं जानता, जिन्होंने आत्मबलिदान द्वारा स्वतंत्रता संग्राम की नींव डाली थी। इसके अतिरिक्त सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, कस्तूरबा गाँधी आदि नारियों ने प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। वर्तमान समय में हर क्षेत्र में नारी राष्ट्र निर्माण में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने में लगी हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में, राजनीति, चिकित्सा, प्रशासन, खेल-कूद, शिक्षण, रक्षा सम्बन्धी कार्यों समेत हर क्षेत्र में नारियों का बहुत योगदान मिल रहा है। उनसे भी अधिक उन नारियों का योगदान है जो अपने पुरुषों को देश निर्माण के कार्यों में लगाकर उनकी गृहस्थी की सेवा कर रही हैं, क्योंकि नारियों का सहयोग न मिलने पर पुरुष कोई काम नहीं कर सकते हैं। कहते हैं नारी नर की खान हैं, जननी है। नारी की गरिमा गौरवपूर्ण है। जिस देश की नारियाँ आगे नहीं आतीं, उस देश की प्रगति अधूरी रहती है, वह देश पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। इसलिए जीवन के हर क्षेत्र में आगे आने के लिए नारियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।"

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) 'नारी नर की खान हैं' वाक्यांश का अर्थ विश्लेषण कीजिए।

(ग) राष्ट्र निर्माण के विकास में नारियों के योगदान के विभिन्न क्षेत्रों का नाम लिखिए।

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी

गद्यांश की दूसरी पंक्ति का "महारानी" शब्द स्कैन में धुँधला है; प्रसंग के आधार पर इसे "महारानी लक्ष्मीबाई" पढ़ा गया है।

(क) शीर्षक

उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

शीर्षक: राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

यह शीर्षक उपयुक्त है, क्योंकि पूरा गद्यांश स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक राष्ट्र निर्माण में नारियों के प्रत्यक्ष और परोक्ष योगदान पर ही केंद्रित है।

(ख) 'नारी नर की खान हैं'

'नारी नर की खान हैं' वाक्यांश का अर्थ विश्लेषण कीजिए।

'खान' वह जगह है जहाँ से कोयला, सोना और हीरे जैसी क़ीमती चीज़ें निकलती हैं। जैसे रत्न खान की कोख से निकलते हैं, वैसे ही हर मनुष्य नारी की कोख से जन्म लेता है। नारी केवल जन्म ही नहीं देती, संतान को पालती-पोसती है और उसके चरित्र तथा संस्कारों को गढ़ती भी है। बड़े-बड़े वीर, विद्वान और महापुरुष इसी 'खान' से निकले हैं। इस वाक्यांश के ज़रिए लेखक कहना चाहता है कि नारी के बिना न मानव-जीवन संभव है, न राष्ट्र का निर्माण; इसीलिए उसकी गरिमा सम्मान के योग्य है।

(ग) योगदान के क्षेत्र

राष्ट्र निर्माण के विकास में नारियों के योगदान के विभिन्न क्षेत्रों का नाम लिखिए।

गद्यांश के अनुसार नारियों ने इन क्षेत्रों में राष्ट्र निर्माण को आगे बढ़ाया है:

- **स्वतंत्रता संग्राम:** महारानी लक्ष्मीबाई ने आत्मबलिदान देकर इस संग्राम की नींव डाली और सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी तथा कस्तूरबा गाँधी ने आंदोलन में सीधे भाग लिया।
- **विज्ञान, राजनीति, चिकित्सा और प्रशासन:** इन क्षेत्रों में नारियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं।
- **खेल-कूद और शिक्षण:** यहाँ भी उनका योगदान बहुत बड़ा है।
- **रक्षा संबंधी कार्य:** देश की सुरक्षा में भी नारियाँ बराबर की भागीदार हैं।
- **गृहस्थी:** जो नारियाँ घर सँभालकर पुरुषों को देश-निर्माण के कामों के लिए मुक्त रखती हैं, उनके इस परोक्ष योगदान को लेखक सबसे बड़ा मानता है।

(घ) सार

उपर्युक्त गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

राष्ट्र निर्माण में नारियों का योगदान पुरुषों से कम नहीं। स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया और आज वे लगभग हर क्षेत्र में बराबरी से काम कर रही हैं। घर सँभालकर पुरुषों को देश-सेवा के लिए मुक्त रखने वाली गृहिणियों का योगदान तो और भी बड़ा है। जिस देश की नारियाँ पीछे रहती हैं, वह पूरी तरह विकसित नहीं हो सकता; इसलिए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> "खान" जैसे शब्द के अर्थ-विश्लेषण में पहले शब्द का सामान्य अर्थ, फिर प्रसंग में उसका लाक्षणिक अर्थ लिखें। सार में नामों की सूची दोहराने से बचें।

प्रश्न 5 · अनुवाद

प्रश्न 40 अंक

हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

Three days after the incident Col. Gracy returned and gave the following account of the tragic disaster. "It was Sunday night. We were getting ready to go to sleep in our own cabins when the ship received a shock and I was thrown off the bed. I heard the cries of agony of the passengers of the ship. I looked at my wristwatch—it was just ten. In the midst of wailing on all sides I came to know that the ship had struck against an iceberg and had been seriously damaged. Death was inevitable."

घटना के तीन दिन बाद कर्नल ग्रेसी लौटे और उन्होंने उस दर्दनाक हादसे का यह आँखों देखा हाल सुनाया: "रविवार की रात थी। हम सब अपने-अपने केबिन में सोने की तैयारी कर रहे थे कि तभी जहाज़ को एक ज़ोरदार झटका लगा और मैं बिस्तर से नीचे जा गिरा।

मुझे जहाज़ के यात्रियों की दर्द भरी चीख़-पुकार सुनाई दी। मैंने अपनी कलाई-घड़ी देखी – ठीक दस बजे थे। चारों ओर मचे हाहाकार के बीच मुझे पता चला कि जहाज़ एक हिमशैल से टकराकर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। मौत से बचना अब असंभव था।"

परीक्षा-संकेत

"tragic disaster" को "दर्दनाक हादसा", "cries of agony" को "दर्द भरी चीख़-पुकार" और "Death was inevitable" को "मौत से बचना अब असंभव था" लिखा गया है। "when the ship received a shock" के लिए "कि तभी … झटका लगा" जैसी हिंदी बनावट शब्दशः अनुवाद से ज़्यादा स्वाभाविक लगती है।

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2020 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: ABC(C-I)-1/B,H,U,N,S/20 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

Write a letter in about 150 words (*any one*):

(Write XYZ for Name and Address)

(क) समाज में बढ़ती हुई असुरक्षा को ध्यान में रखते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या को दूर करने के लिए स्वास्थ्य-विभाग को पत्र लिखिए।

(ग) करोना या कोविड-19 का समाज पर प्रभाव।

(क) समाज में बढ़ती असुरक्षा (संपादक को पत्र)

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: समाज में बढ़ती असुरक्षा की ओर ध्यान दिलाने हेतु।

महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं समाज में बढ़ती असुरक्षा की ओर प्रशासन का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

हालात ऐसे हो गए हैं कि शाम ढलते ही लोग घर से निकलने में हिचकने लगे हैं। चेन-झपटमारी, चोरी, राह चलती लड़कियों से छेड़छाड़ और ऑनलाइन ठगी की ख़बरें रोज़ छपती हैं। महिलाएँ, बुज़ुर्ग और बच्चे सबसे ज़्यादा डरे हुए हैं। कई गलियों में सड़क की बत्तियाँ ख़राब पड़ी हैं और पुलिस की गश्त भी कम ही दिखती है।

मेरा अनुरोध है कि रात में पुलिस गश्त बढ़ाई जाए, सुनसान जगहों पर रोशनी और सीसीटीवी कैमरे लगें और शिकायतों पर तुरंत कार्रवाई हो। मोहल्लों में नागरिक समितियाँ बनाकर पुलिस का हाथ बँटाया जा सकता है। हम नागरिकों को भी सतर्क रहना होगा।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित कर हमारी चिंता अधिकारियों तक पहुँचाएँगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 10 नवंबर 2020

(ख) खाद्य पदार्थों में मिलावट (स्वास्थ्य-विभाग को पत्र)

सेवा में,
स्वास्थ्य निदेशक,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग,
पश्चिम बंगाल सरकार,
कोलकाता।

विषय: खाद्य पदार्थों में बढ़ती मिलावट पर रोक लगाने हेतु।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र के बाज़ारों में बिक रहे मिलावटी खाद्य पदार्थों की ओर दिलाना चाहता हूँ, जो लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर ख़तरा बन गए हैं।

यहाँ खुलेआम दूध में पानी, मसालों में रंग, सरसों के तेल में सस्ता तेल और मिठाइयों में घटिया खोया मिलाया जा रहा है। सब्ज़ियों को चमकाने के लिए रसायन लगाए जाते हैं। ऐसी चीज़ें खाकर लोग पेट की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं; लगातार सेवन से गुर्दे और यकृत तक ख़राब हो जाते हैं। बच्चों और बुज़ुर्गों पर इसका असर सबसे ज़्यादा पड़ता है।

अतः आपसे निवेदन है कि बाज़ारों और दुकानों से नियमित रूप से नमूने लेकर उनकी जाँच कराई जाए। दोषी व्यापारियों के लाइसेंस रद्द कर उन्हें कठोर दंड दिया जाए। शिकायत के लिए हेल्पलाइन शुरू हो और उपभोक्ताओं में जागरूकता फैलाने के लिए अभियान चलाए जाएँ।

आशा है, आप इस दिशा में शीघ्र आवश्यक क़दम उठाएँगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 10 नवंबर 2020

परीक्षा-संकेत

यह पत्र संपादक को नहीं, विभाग को है, इसलिए "सेवा में" के बाद अधिकारी का पद और विभाग लिखें और भाषा निवेदन की रखें। अंत में अपेक्षित कार्रवाई साफ़ शब्दों में माँगें।

(ग) कोरोना या कोविड-19 का समाज पर प्रभाव

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात खबर,
कोलकाता।

विषय: कोविड-19 महामारी के सामाजिक प्रभावों पर विचार।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं कोरोना महामारी के सामाजिक प्रभावों पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

इस महामारी ने जीवन का ढर्रा ही बदल दिया। लॉकडाउन में लाखों प्रवासी मज़दूरों का रोज़गार छिन गया और बहुतों को सैकड़ों किलोमीटर पैदल घर लौटना पड़ा। छोटे कारोबार ठप पड़ गए, स्कूल बंद रहे और ग़रीब बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित रह गए। अकेलेपन और डर से मानसिक तनाव भी बढ़ा।

फिर भी इस संकट ने कई सबक़ सिखाए। लोग साफ़-सफ़ाई और सेहत के प्रति जागरूक हुए, घर से काम करने और डिजिटल लेन-देन का चलन बढ़ा तथा अनगिनत लोगों ने ज़रूरतमंदों की निःस्वार्थ सेवा की।

मेरा मानना है कि अब सरकार सार्वजनिक स्वास्थ्य-व्यवस्था मज़बूत करे और असंगठित क्षेत्र के कामगारों की सामाजिक सुरक्षा पक्की करे।

आशा है, आप इस पत्र को प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 10 नवंबर 2020

परीक्षा-संकेत

विकल्प (ग) में केवल विषय दिया है, इसलिए इसे संपादक को लिखे विचार-पत्र के रूप में लिखें और प्रभाव के दोनों पक्ष दिखाएँ: नुक़सान भी और सीख भी। प्रश्न-पत्र में "करोना" छपा है; उत्तर में सही रूप "कोरोना" ही लिखें।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

'महिलाओं पर बढ़ रही सामाजिक हिंसा' पर चिन्ता व्यक्त करते हुए समाचार पत्र के लिए एक प्रतिवेदन लिखिए। (अधिकतम 200 शब्दों में)

महिलाओं पर बढ़ती हिंसा: क़ानून के साथ सोच बदलना भी ज़रूरी

कोलकाता, 8 मार्च (निज संवाददाता)। तमाम क़ानूनों और जागरूकता अभियानों के बावजूद महिलाओं पर होने वाली हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही। घरेलू हिंसा, दहेज-उत्पीड़न, छेड़छाड़, बलात्कार, तेज़ाबी हमले और कार्यस्थल पर उत्पीड़न की ख़बरें रोज़ आ रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़े भी ऐसे मामलों में लगातार बढ़ोतरी दिखाते हैं। लॉकडाउन के दिनों में घरेलू हिंसा की शिकायतें और बढ़ गई थीं।

शहर की कई छात्राओं और कामकाजी महिलाओं ने बताया कि देर शाम बस या ट्रेन से लौटते समय वे असुरक्षित महसूस करती हैं। समाजशास्त्रियों के अनुसार इस हिंसा की जड़ में पितृसत्तात्मक सोच, अशिक्षा, नशाखोरी और महिलाओं की आर्थिक परनिर्भरता है। बहुत-से मामले लोकलाज और डर से थाने तक पहुँचते ही नहीं; जो पहुँचते हैं, उनके मुक़दमे बरसों खिंचते हैं।

पुलिस ने महिला हेल्पलाइन, महिला थाने और विशेष गश्ती दल शुरू किए हैं। विशेषज्ञ त्वरित अदालतों, पीड़िताओं की सुरक्षा, स्कूलों में लैंगिक संवेदनशीलता की शिक्षा और महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर ज़ोर देते हैं।

सच तो यह है कि जब तक घर से लेकर समाज तक महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना नहीं पनपेगी, अकेले क़ानून इस हिंसा को नहीं रोक पाएँगे।

परीक्षा-संकेत

यहाँ शब्द-सीमा "अधिकतम 200" है, इसलिए शीर्षक समेत 200 शब्द पार न करें। "चिन्ता व्यक्त करते हुए" का निर्वाह अंतिम अनुच्छेद में साफ़ दिखना चाहिए।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सार लिखिए:

आदमी के लिए आजादी एक बेशकीमती मोती है। वह आजादी तब ही हासिल हो सकती है जब हम अनेक तरह की फिक्र और चिन्ता से निर्द्वन्द्व हों और हमारी तबियत में आत्मनिर्भरता ने दखल कर लिया हो। इस दिशा में बड़ी से बड़ी चिन्ता और फिक्र हमें उतनी असह्य न मालूम होगी कि वह हमारी स्वच्छंदता को जड़ से उखाड़ सके। किसी वस्तु का जब बीज बना रहता है तो उसको फिर बढ़ा लेना सहज है। आत्मनिर्भरता की योग्यता सम्पादन किये बिना ही हम लोगों के माँ-बाप लड़कपन में अपने लड़कों का ब्याह कर यावज्जीवन के लिए उनकी स्वच्छंदता का बीज नष्ट कर देते हैं।

शीर्षक: आत्मनिर्भरता: स्वतंत्रता की जड़

स्वतंत्रता अमूल्य है, पर वह चिंताओं से मुक्त, आत्मनिर्भर व्यक्ति को ही मिलती है, जिसकी आज़ादी कोई चिंता नहीं छीन सकती। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ माता-पिता संतान को आत्मनिर्भर बनाए बिना कच्ची उम्र में ब्याहकर इसकी जड़ ही काट देते हैं।

(मूल गद्यांश: लगभग 105 शब्द; सार: लगभग 40 शब्द)

परीक्षा-संकेत

"बीज बना रहना" एक दृष्टांत है; सार में उसे दोहराने के बजाय उसका भाव लिखें। बाल-विवाह वाली बात लेखक का मुख्य निष्कर्ष है, उसे छोड़ें नहीं।

प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 10×4=40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

ऊर्जा हमारे जीवन का पर्याय है। औद्योगिक विकास का मूलाधार भी यही है। लेकिन विकास के साथ ही हमने प्रकृति को खोखला कर डाला है। प्राकृतिक सम्पद का ऐसा खुलकर अपव्यय किया है, जिसकी भरपाई सम्भव नहीं है। हमने तात्कालिक लाभ के लिए दूरगामी दुष्प्रभावों को ताक पर रख दिया है, क्योंकि टेक्नोलॉजी के विकास के जरिए आधुनिक विकास की दौड़ में हम लगे हुए हैं। पूर्वकाल की सभ्यताओं के साथ बात उल्टी थी। वे प्रकृति को प्राकृतिक संसाधनों का खजाना मात्र नहीं मानती थी। उसके हर रूप में देवी स्वरूप दर्शन करती थी, लेकिन टेक्नोलॉजी से उद्भुत सभ्यता उपभोगवादी संस्कृति की कायल है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) ऊर्जा का हमारे सामाजिक जीवन में क्या महत्त्व है?

(ग) तात्कालिक लाभ के लिए दूरगामी दुष्प्रभावों को ताक पर रखने का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) पूर्वकाल की सभ्यताओं से वर्तमान सभ्यता का पार्थक्य स्पष्ट कीजिए।

(क) शीर्षक

उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

शीर्षक: विकास की अंधी दौड़ और प्रकृति का दोहन

गद्यांश का केंद्रीय विचार यही है कि ऊर्जा और तकनीक के सहारे विकास की होड़ में मनुष्य ने प्रकृति को खोखला कर डाला है, इसलिए यह शीर्षक सटीक बैठता है।

(ख) ऊर्जा का सामाजिक महत्त्व

ऊर्जा का हमारे सामाजिक जीवन में क्या महत्त्व है?

गद्यांश के अनुसार ऊर्जा हमारे जीवन का पर्याय है, यानी उसके बिना आज के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। घर में रोशनी और खाना पकाने से लेकर यातायात, संचार, अस्पताल और विद्यालय तक, सब ऊर्जा के सहारे चलते हैं। खेतों की सिंचाई, कारखानों का उत्पादन और लोगों का रोज़गार भी इसी पर टिका है, इसीलिए इसे औद्योगिक विकास का मूलाधार कहा गया है। जिस समाज के पास पर्याप्त ऊर्जा है, वहाँ जीवन-स्तर ऊँचा होता है और प्रगति भी तेज़ होती है। पर गद्यांश यह चेतावनी भी देता है कि ऊर्जा की यह भूख प्रकृति की क़ीमत पर नहीं मिटनी चाहिए।

(ग) 'ताक पर रखने' का आशय

तात्कालिक लाभ के लिए दूरगामी दुष्प्रभावों को ताक पर रखने का आशय स्पष्ट कीजिए।

"ताक पर रखना" मुहावरे का अर्थ है किसी बात की जान-बूझकर अनदेखी करना। लेखक कहना चाहता है कि आज मनुष्य अधिक उत्पादन, मुनाफ़ा और सुख-सुविधा जैसे तुरंत मिलने वाले लाभों के पीछे भाग रहा है। इस होड़ में वह यह नहीं सोचता कि जंगलों की कटाई, खनिजों और ईंधन के अंधाधुंध दोहन तथा प्रदूषण के आगे चलकर क्या परिणाम होंगे। जलवायु-परिवर्तन, जल-संकट और संसाधनों की कमी इसी अनदेखी के नतीजे हैं, जिनकी क़ीमत आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी।

(घ) पूर्वकाल और वर्तमान सभ्यता का पार्थक्य

पूर्वकाल की सभ्यताओं से वर्तमान सभ्यता का पार्थक्य स्पष्ट कीजिए।

गद्यांश के अनुसार दोनों सभ्यताओं में सबसे बड़ा अंतर प्रकृति को देखने की दृष्टि का है। पुरानी सभ्यताएँ प्रकृति को केवल संसाधनों का खज़ाना नहीं मानती थीं। वे उसके हर रूप में देवी के दर्शन करती थीं; नदी, पर्वत, वृक्ष और धरती उनके लिए पूज्य थे। इसलिए वे प्रकृति से उतना ही लेती थीं जितना ज़रूरी होता, और उसके प्रति कृतज्ञ रहती थीं। इसके उलट, तकनीक से जन्मी आज की सभ्यता उपभोगवादी संस्कृति की कायल है। उसके लिए प्रकृति भोग की वस्तु भर है, जिसे वह तात्कालिक लाभ के लिए बेहिसाब निचोड़ रही है। संक्षेप में, पहले श्रद्धा और संयम था, आज लालसा और अपव्यय है।

परीक्षा-संकेत

"आशय स्पष्ट कीजिए" वाले प्रश्न में पहले मुहावरे का शब्दार्थ दें, फिर गद्यांश के प्रसंग में उसका भाव। "पार्थक्य" का अर्थ अंतर है, इसलिए उत्तर तुलना के रूप में लिखें।

प्रश्न 5 · अनुवाद

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

That afternoon almost the whole of Kamarpukur comes for the Kirtan, through Dhani, the word was spread that Ramkrishna would go back to Dakshineswar, so no one wanted to miss this opportunity. As the courtyard is too small to hold the crowd, they shift to a nearby field. Several of the men have Khols, two or three have violin and a few others have flutes. The men sit on the ground in a group with Ramkrishna and the ladies sit on one side.

टिप्पणी

प्रश्न-पत्र में निर्देश-पंक्ति "निम्नखित" छपी है; यहाँ उसे "निम्नलिखित" कर दिया गया है।

उस दिन तीसरे पहर लगभग पूरा कामारपुकुर कीर्तन के लिए उमड़ पड़ता है। धनी के ज़रिए यह बात फैल चुकी थी कि रामकृष्ण दक्षिणेश्वर लौटने वाले हैं, इसलिए कोई भी यह मौक़ा हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। आँगन इतना छोटा है कि उसमें इतनी भीड़ नहीं समा सकती, इसलिए सब लोग पास के एक मैदान में चले जाते हैं। कई पुरुषों के पास खोल हैं, दो-तीन के पास वायलिन और कुछ के हाथों में बाँसुरियाँ। पुरुष रामकृष्ण के साथ टोली बनाकर ज़मीन पर बैठ जाते हैं और स्त्रियाँ एक ओर।

परीक्षा-संकेत

"That afternoon" के लिए "उस दिन तीसरे पहर" सहज हिंदी है। मूल अंश दृश्य को वर्तमान काल में दिखाता है, इसलिए अनुवाद में भी वर्तमान काल रखा गया है; केवल पहले फैल चुकी ख़बर वाला अंश भूतकाल में है। "Khol" बंगाल का मिट्टी का ढोल है; इसे "खोल" ही लिखें और "Dhani" को "धनी"।

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2019 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: MSC-(C)-2/19 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी हिन्दी समाचारपत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में):

(नाम पता के स्थान पर XYZ लिखिए।)

(क) बेरोजगारी की समस्या

(ख) मोबाइल के बढ़ते प्रयोग के दुष्परिणाम

(ग) अभिव्यक्ति की आजादी

(क) बेरोजगारी की समस्या

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: युवाओं में बढ़ती बेरोज़गारी की ओर ध्यान दिलाने हेतु।

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से मैं देश में तेज़ी से बढ़ती बेरोज़गारी की ओर शासन का ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

आज हालत यह है कि डिग्रियाँ लिए लाखों युवा नौकरी के लिए दफ़्तरों के चक्कर काट रहे हैं। चपरासी के पदों के लिए भी हज़ारों स्नातक आवेदन करते हैं। लंबी बेकारी उनमें निराशा और कुंठा भर देती है। कई युवा नशे या अपराध की राह पकड़ लेते हैं, तो कई रोज़ी के लिए दूसरे राज्यों में भटकते हैं।

मेरा मानना है कि शिक्षा को रोज़गार से जोड़ा जाए और हर ज़िले में व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र खुलें। कुटीर और लघु उद्योगों को सस्ता ऋण मिले, ताकि युवा नौकरी माँगने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें। सरकारी दफ़्तरों के खाली पद भी जल्द भरे जाएँ।

आशा है, आप इसे प्रकाशित कर जनहित में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ

पता: XYZ
दिनांक: 10 जून 2019

(ख) मोबाइल के बढ़ते प्रयोग के दुष्परिणाम

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: मोबाइल के बढ़ते प्रयोग से हो रहे दुष्परिणामों के संबंध में।

महोदय,
आपके लोकप्रिय दैनिक के माध्यम से मैं मोबाइल फ़ोन की उस लत की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ, जो आज हर उम्र के लोगों को जकड़ चुकी है।

मोबाइल ने जीवन आसान बनाया है, पर इसका बेहिसाब इस्तेमाल अब बीमारी बन चुका है। घंटों गेम और वीडियो में डूबे बच्चों की पढ़ाई, नींद और आँखों, तीनों पर बुरा असर पड़ रहा है। एक ही कमरे में बैठे परिजन आपस में बात करने के बजाय अपनी-अपनी स्क्रीन में खोए रहते हैं। मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी चलाना तो दुर्घटना को न्योता देना है।

अभिभावक बच्चों के लिए मोबाइल का समय तय करें और पहले ख़ुद संयम बरतें, क्योंकि बच्चे देखकर ही सीखते हैं। विद्यालय भी इसके सही इस्तेमाल की सीख दें।

आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित कर पाठकों को सचेत करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 10 जून 2019

(ग) अभिव्यक्ति की आजादी

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: अभिव्यक्ति की आज़ादी और उसकी मर्यादा के संबंध में।

महोदय,
आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से मैं अभिव्यक्ति की आज़ादी पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

संविधान का अनुच्छेद 19 हर नागरिक को बोलने और लिखने की आज़ादी देता है। यही लोकतंत्र की प्राणवायु है। इसी के बल पर नागरिक सरकार की आलोचना करते हैं और पत्रकार भ्रष्टाचार उजागर करते हैं। किंतु आज इस पर दोनों ओर से चोट हो रही है। एक ओर असहमति जताने वालों को डराया-धमकाया जाता है, तो दूसरी ओर कुछ लोग इसकी आड़ में नफ़रत और झूठी ख़बरें फैलाते हैं।

मेरी राय में आज़ादी और ज़िम्मेदारी साथ-साथ चलनी चाहिए। सरकार असहमति का सम्मान करे और नागरिक याद रखें कि संविधान ने देश की अखंडता, सार्वजनिक व्यवस्था और दूसरों की मान-प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उचित प्रतिबंध भी लगाए हैं।

आशा है, आप इसे प्रकाशित कर स्वस्थ बहस को बढ़ावा देंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 10 जून 2019

परीक्षा-संकेत

प्रश्न में "अपने विचार व्यक्त करते हुए" पत्र लिखने को कहा गया है, इसलिए केवल शिकायत न करें; समस्या, उसके कारण-परिणाम और अपनी राय या सुझाव, तीनों लिखें। शब्द-सीमा "अधिकतम 150" है, सो पत्र का मुख्य भाग 150 शब्दों से आगे न बढ़ने दें।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

आर्थिक आधार पर आरक्षण आवश्यक है।

आर्थिक आधार पर आरक्षण: सामाजिक न्याय का नया पड़ाव

कोलकाता, 20 जनवरी (निज संवाददाता)। सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को शिक्षा और सरकारी नौकरियों में दस प्रतिशत आरक्षण देने वाले संविधान संशोधन के बाद यह बहस फिर तेज़ हो गई है कि आरक्षण का आधार क्या हो।

अब तक आरक्षण का मुख्य आधार सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ापन रहा है। इसने सदियों से वंचित समुदायों को आगे बढ़ने का अवसर दिया है। पर गरीबी किसी एक जाति तक सीमित नहीं है। ऊँची मानी जाने वाली जातियों में भी अनगिनत परिवार दो वक़्त की रोटी के लिए जूझ रहे हैं, और उनके मेधावी बच्चे फ़ीस और कोचिंग के अभाव में पीछे छूट जाते हैं।

शहर के शिक्षाविदों का कहना है कि आर्थिक आधार पर आरक्षण सामाजिक न्याय का दायरा बढ़ाता है और इससे जातिगत कटुता भी घट सकती है। कुछ विशेषज्ञ यह चेतावनी भी देते हैं कि आय-प्रमाणपत्रों की कड़ी जाँच न हुई, तो इसका लाभ असली ज़रूरतमंदों के बजाय संपन्न लोग उठा ले जाएँगे। उनकी राय में रोज़गार के नए अवसर बढ़ाए बिना कोई भी आरक्षण अधूरा रहेगा।

कुल मिलाकर, आरक्षण का असली उद्देश्य अवसर से वंचित हर व्यक्ति तक पहुँचना है, और आर्थिक आधार इस दिशा में एक ज़रूरी कदम है।

परीक्षा-संकेत

"संपादकीय प्रतिवेदन" में शीर्षक और दिनांक-पंक्ति के बाद तथ्य, दोनों पक्षों के तर्क और अंत में संतुलित निष्कर्ष दें। विषय-वाक्य ("आवश्यक है") का समर्थन करें, पर आपत्तियों का भी उल्लेख करें।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

अभिव्यक्ति की ताकत अगर मनुष्य को पशु से भिन्न बनाती है, तो साहित्य उसे दिशा देता है और अहसास दिलाता है कि वह मनुष्य अकेला नहीं बल्कि एक समाज का अंग है, और प्रतिबद्ध साहित्य समाज को गतिशील बनाता है, जड़ नहीं। समृद्ध, सशक्त समाज की पहचान उसके समय के साथ खुद को बदलने की क्षमता में होती है, न कि जड़ बन कर समय को बाँध देने में। आज तक आदिवासी समाज को भारत में मैदानी मध्यवर्गीय मानसिकता वाले समुदाय ने, जो जातीय दंभ से लैस भी रहा, दायरे से बाहर आने ही नहीं दिया। उन्होंने न तो इन्हें विकसित होने दिया और न ही इन्हें अपने में समाहित होने दिया। आदिवासी मनुष्य को एक वनवासी मनुष्य के फ्रेम में मढ़ दिया गया। वह अधिक संवेदनशील, अधिक कलात्मक, उदार, उदात्त, सहनशील, सरल है। वह ताल-लय-स्वर में पारंगत है। वह जीवन का व्यापार नहीं करता, बस जीने के नियम जानता है। हर विपरीत परिस्थिति में रहता है, पर प्रकृति को नष्ट नहीं करता।

टिप्पणी

छपाई की दो भूलें सुधारकर पढ़ी गई हैं: मूल में "न की जड़ बन कर" को "न कि जड़ बन कर" और "न ही हन्हें" को "न ही इन्हें"।

शीर्षक: साहित्य, समाज और उपेक्षित आदिवासी

अभिव्यक्ति मनुष्य को पशु से अलग करती है, साहित्य उसे समाज से जोड़ता है और प्रतिबद्ध साहित्य समाज को गतिशील बनाता है। पर जातीय दंभ से भरे मैदानी मध्यवर्ग ने आदिवासियों को न विकसित होने दिया, न अपनाया, बस "वनवासी" की छवि में बाँध दिया, जबकि वे संवेदनशील, कलाप्रिय, उदार और सरल हैं तथा प्रकृति को नष्ट नहीं करते।

(मूल गद्यांश: लगभग 165 शब्द; सार: लगभग 60 शब्द)

परीक्षा-संकेत

सार में गद्यांश के दोनों भाग जोड़ें: साहित्य और समाज का संबंध, तथा आदिवासियों की उपेक्षा। गुणों की लंबी सूची को कुछ शब्दों में समेटें, सबको दोहराएँ नहीं।

प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश का पाठ कर उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

यह सत्य है कि स्वातंत्र्य पूर्व का युग पराधीनता के विरुद्ध किये जाने वाले संघर्षों और राष्ट्रीय जागरण का काल था और राजनीतिज्ञों की भाँति समग्र देश के साहित्यकारों के चिंतन, मनन, दर्शन और अभिव्यक्ति का केंद्रबिंदु सामाजिक विषमता, कलुषता और फूट से उत्पन्न विपन्नता का **उत्स बन बैठी पराधीनता** थी, जिसके विरुद्ध रचनात्मक और स्वस्थ दृष्टिकोण रखकर नाना प्रकार के रूपों में चैतन्य साहित्य की सृष्टि की गई। फलस्वरूप प्राणवंत साहित्य की प्रेरणा के कारण गुलामी के कष्टों और पीड़ाओं के विरुद्ध **दिनों दिन लोकभावना उग्र होती गई** और एक दिन देश स्वतंत्र हो गया। यह भी सच है कि परतंत्रता के कष्टों और अत्याचारों के प्रति **विद्रोह-रागिनी** ध्वनित करने वाले साहित्यकारों और प्रजाजनों की आँखों में एक सुखद भविष्य और **स्वतंत्र देश की गौरवमय कल्पना का चित्र** झिलमिलाया करता था, जिसके प्रति उनमें अटूट विश्वास और आस्था थी। फिर स्वतंत्रता की हवा के स्पर्श मात्र से उनकी वे **सुखद कल्पनाएँ और गौरवमय भविष्य के चित्र क्यों धूमिल और अन्तर्ध्यान हो गए हैं?** क्यों उनकी वह सर्जनात्मक शक्ति और प्रतिभा कुंठित हो गयी? नित्य यह प्रश्न और कुछ इस तरह के दूसरे प्रश्न लोकमानस को आज विचलित कर रहे हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) रेखांकित अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्वतंत्रता की हवा के स्पर्शमात्र से देश में क्या घटनाएँ घटित हुईं?

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी

प्रश्न-पत्र में रेखांकित पाँच अंश यहाँ मोटे अक्षरों में दिखाए गए हैं। छपाई की कुछ भूलें सुधारकर पढ़ी गई हैं: "स्वतंत्र्य पूर्व" को "स्वातंत्र्य पूर्व", "स्वस्थ्य दृष्टिकोण" को "स्वस्थ दृष्टिकोण", "विस्वास" को "विश्वास" और "कुछ हस तरह" को "कुछ इस तरह"। प्रश्न (ग) के अंत में छपा "हुई?" यहाँ "हुईं?" लिखा गया है।

(क) शीर्षक

उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

शीर्षक: स्वाधीनता के सपने और मोहभंग

गद्यांश के दो पक्ष हैं। पहले हिस्से में स्वाधीनता-संग्राम का साहित्य लोगों की आँखों में स्वतंत्र और गौरवमय भारत का सपना जगाता है; दूसरे हिस्से में लेखक पीड़ा के साथ पूछता है कि आज़ादी मिलते ही वह सपना धुँधला क्यों पड़ गया। "सपने" और "मोहभंग", ये दो शब्द पूरे गद्यांश का भाव समेट लेते हैं।

(ख) रेखांकित अंशों के अर्थ

रेखांकित अंशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1. "उत्स बन बैठी पराधीनता"

"उत्स" का अर्थ है स्रोत या उद्गम। लेखक के अनुसार स्वतंत्रता से पहले समाज में विषमता, कलुषता और आपसी फूट थी, और इनसे देश में घोर दरिद्रता फैली हुई थी। इन सब बुराइयों की जड़ पराधीनता थी। "बन बैठी" कहने में यह भाव छिपा है कि गुलामी ज़बरदस्ती इन बुराइयों की जननी बनकर जम गई थी। इसीलिए उस युग के साहित्यकारों के चिंतन और लेखन के केंद्र में यही पराधीनता थी।

2. "दिनों दिन लोकभावना उग्र होती गई"

अर्थात् गुलामी के कष्टों के विरुद्ध जनता का आक्रोश दिन-प्रतिदिन तीव्र होता गया। उस युग के प्राणवान साहित्य ने लोगों को उनकी पीड़ा और अपमान का बोध कराया, और धीरे-धीरे यह असंतोष एक व्यापक जन-आंदोलन बन गया। उसी के आगे विदेशी सत्ता को झुकना पड़ा और देश स्वतंत्र हुआ। यहाँ "उग्र" का आशय हिंसक नहीं, बल्कि प्रबल और तीव्र है।

3. "विद्रोह-रागिनी"

"रागिनी" शास्त्रीय संगीत की मधुर धुन को कहते हैं। "विद्रोह-रागिनी" से लेखक का आशय विद्रोह के उस स्वर से है, जो उस युग के साहित्यकारों की कविताओं, गीतों और रचनाओं में गूँजता था। जैसे कोई धुन सुनने वाले के मन में उतर जाती है, वैसे ही अत्याचार के विरुद्ध लिखी ये रचनाएँ जन-जन के मन में बस गईं और उनमें प्रतिरोध का साहस भर दिया। विद्रोह को "रागिनी" कहकर लेखक ने एक सुंदर रूपक रचा है।

4. "स्वतंत्र देश की गौरवमय कल्पना का चित्र"

इसका अर्थ है वह सुनहरा सपना, जो साहित्यकारों और आम देशवासियों ने अपनी आँखों में सँजो रखा था। वे ऐसे भारत की कल्पना करते थे, जो शोषण, गरीबी, विषमता और फूट से मुक्त हो, जहाँ हर नागरिक सम्मान से जी सके और जो संसार में गर्व से सिर उठाकर खड़ा हो। इस सपने पर उनकी अटूट आस्था थी, और यही आस्था उन्हें गुलामी के कष्ट सहने की शक्ति देती थी।

5. "सुखद कल्पनाएँ और गौरवमय भविष्य के चित्र क्यों धूमिल और अन्तर्ध्यान हो गए हैं?"

इस प्रश्न में लेखक की गहरी पीड़ा झलकती है; यह मोहभंग का स्वर है। "धूमिल" का अर्थ है धुँधला और "अन्तर्ध्यान" (शुद्ध रूप "अंतर्धान") का अर्थ है आँखों से ओझल हो जाना। आज़ादी से पहले लोगों ने जिस सुखी, समृद्ध और न्यायपूर्ण भारत का सपना देखा था, वह स्वतंत्रता के बाद साकार न हो सका; पहले धुँधला पड़ा, फिर मानो आँखों से ओझल ही हो गया। "हो गए हैं" का काल बताता है कि यह निराशा आज भी बनी हुई है, और लेखक इसी का कारण पूछ रहा है।

(ग) स्वतंत्रता के बाद की घटनाएँ

स्वतंत्रता की हवा के स्पर्शमात्र से देश में क्या घटनाएँ घटित हुईं?

गद्यांश के अनुसार आज़ादी की हवा लगते ही देश में मोहभंग का दौर शुरू हो गया। जिन साहित्यकारों और देशवासियों ने सुखद भविष्य और गौरवमय भारत का सपना देखा था, उनके वे सपने पहले धुँधले पड़े और फिर ओझल हो गए। जो सर्जनात्मक शक्ति और प्रतिभा गुलामी के विरुद्ध प्रखर होकर जागी थी, वह कुंठित हो गई; साहित्य से मानो वह आग ही बुझ गई, जिसने कभी पूरे देश को जगाया था। लेखक इसका कारण नहीं बताता, पर संकेत यही है कि लक्ष्य पा लेने के बाद संघर्ष के दिनों का उत्साह और आदर्श ढीले पड़ गए। इसीलिए आज लोकमानस बार-बार यही पूछकर बेचैन होता है कि आख़िर ऐसा क्यों हुआ।

(घ) सार

उपर्युक्त गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

राष्ट्रीय जागरण के युग में राजनेताओं की तरह साहित्यकारों ने भी समाज की विषमता, फूट और दरिद्रता की जड़ पराधीनता को माना और उसके विरुद्ध प्रेरक साहित्य रचा। इससे जनता का आक्रोश बढ़ता गया और देश आज़ाद हुआ। तब लोगों की आँखों में गौरवमय भारत का सपना था, पर आज़ादी मिलते ही वह धुँधला गया और रचनात्मक प्रतिभा कुंठित हो गई। ऐसा क्यों हुआ, यही प्रश्न आज लोकमानस को बेचैन कर रहा है।

(मूल गद्यांश: लगभग 190 शब्द; सार: लगभग 70 शब्द)

परीक्षा-संकेत

रेखांकित अंशों की व्याख्या में पहले कठिन शब्द का अर्थ दें ("उत्स", "रागिनी", "अंतर्धान"), फिर प्रसंग के साथ भाव स्पष्ट करें। प्रश्न (ग) का उत्तर गद्यांश से बाहर न जाए; अपनी व्याख्या जोड़ें तो उसे गद्यांश के भाव से जोड़कर लिखें।

प्रश्न 5 · अनुवाद

प्रश्न 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

Our total environment influences our life and our way of living. The main elements of our environment are men, animals, plants, soil, air and water. There are relationships among these elements. When their relationships are disturbed, life becomes difficult and impossible. By keeping the environment safe man can ensure a healthier and happier life.

हमारा समूचा पर्यावरण हमारे जीवन और रहन-सहन को प्रभावित करता है। मनुष्य, पशु, पेड़-पौधे, मिट्टी, हवा और पानी हमारे पर्यावरण के मुख्य तत्त्व हैं। ये तत्त्व आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब इनका आपसी संबंध बिगड़ता है, तो जीवन कठिन ही नहीं, असंभव तक हो जाता है। पर्यावरण को सुरक्षित रखकर मनुष्य अपने लिए अधिक स्वस्थ और सुखी जीवन सुनिश्चित कर सकता है।

परीक्षा-संकेत

"total environment" को "समूचा पर्यावरण", "way of living" को "रहन-सहन" और "difficult and impossible" को "कठिन ही नहीं, असंभव तक" लिखा गया है, ताकि वाक्य हिंदी की सहज लय में आए। "There are relationships among these elements" का शब्दशः अनुवाद ("इनके बीच संबंध हैं") अटपटा लगता है; "ये तत्त्व आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं" स्वाभाविक है।

डब्ल्यूबीसीएस मुख्य परीक्षा 2018 · हिंदी

प्रश्न-पत्र कोड: CS-(C)-2/18 · **समय:** 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200

टिप्पणी

स्कैन में इस प्रश्न-पत्र का ऊपरी हिस्सा (प्रश्न-पत्र का नाम, समय और सामान्य निर्देश) नहीं है; प्रश्न 1 से 5 पूरे उपलब्ध हैं। पूर्णांक पाँचों प्रश्नों के अंक (प्रत्येक 40) जोड़कर लिखा गया है, और समय वही 3 घंटे माना गया है जो अन्य वर्षों के इसी प्रश्न-पत्र में छपा है।

प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

प्रश्न 40 अंक

Write a letter in about 150 words (*any one*):

(Write XYZ for Name and Address)

(क) बढ़ते प्रदूषण का दुष्प्रभाव

(ख) जीवन में त्यौहारों का महत्त्व

(ग) मोबाइल के अंधाधुंध प्रयोग से होने वाले नुकसान।

(क) बढ़ते प्रदूषण का दुष्प्रभाव

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: बढ़ते प्रदूषण के दुष्प्रभावों की ओर ध्यान दिलाने हेतु।

महोदय,
आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से मैं शहर में दिनोंदिन बढ़ते प्रदूषण और उसके घातक असर की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

सुबह घर से निकलते ही धुएँ और धूल से आँखें जलने लगती हैं। सड़कों पर पुरानी गाड़ियाँ काला धुआँ उगलती हैं, कारख़ानों का गंदा पानी नदी में बहाया जाता है और जगह-जगह कूड़े के ढेर जलाए जाते हैं। नतीजा यह है कि दमा, खाँसी, एलर्जी और त्वचा के रोग तेज़ी से फैल रहे हैं। सबसे बुरा असर बच्चों और बुज़ुर्गों पर पड़ रहा है।

प्रशासन से अनुरोध है कि धुआँ छोड़ने वाले वाहनों और कारख़ानों पर सख़्त कार्रवाई हो, कूड़ा जलाने पर रोक लगे और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दिया जाए। हम नागरिक भी ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाएँ और प्लास्टिक से बचें।

आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित कर जनहित में सहयोग देंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 15 जुलाई 2018

(ख) जीवन में त्यौहारों का महत्त्व

सेवा में,

संपादक महोदय,

जनसत्ता,

कोलकाता।

विषय: जीवन में त्योहारों के महत्त्व और उनके बदलते स्वरूप के संबंध में।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से मैं त्योहारों के महत्त्व पर अपने विचार रखना चाहता हूँ।

त्योहार हमारे जीवन में उल्लास भरते हैं। रोज़ की भाग-दौड़ के बीच ये हमें अपनों के साथ ख़ुशियाँ बाँटने का अवसर देते हैं। दुर्गापूजा, दीवाली, ईद, छठ और क्रिसमस जैसे पर्व अलग-अलग धर्मों और भाषाओं के लोगों को एक सूत्र में बाँधते हैं। इन्हीं के सहारे हमारी परंपराएँ, लोककलाएँ और संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुँचते हैं। कारीगरों और छोटे व्यापारियों की रोज़ी-रोटी भी काफ़ी हद तक त्योहारों पर टिकी है।

दुख की बात है कि कई त्योहार दिखावे, फ़िज़ूलख़र्ची, शोर और प्रदूषण का पर्याय बनते जा रहे हैं। मेरा निवेदन है कि हम सादगी से और पर्यावरण का ध्यान रखकर त्योहार मनाएँ, और ज़रूरतमंदों को भी अपनी ख़ुशियों में शामिल करें।

आशा है, आप इसे प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 15 जुलाई 2018

(ग) मोबाइल के अंधाधुंध प्रयोग से होने वाले नुकसान।

सेवा में,

संपादक महोदय,

छपते-छपते,

कोलकाता।

विषय: मोबाइल के अंधाधुंध प्रयोग से हो रहे नुकसानों के संबंध में।

महोदय,
आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से मैं मोबाइल के बेहिसाब इस्तेमाल से हो रहे नुकसानों की ओर ध्यान खींचना चाहता हूँ।

मोबाइल ज़रूरत से बढ़कर आदत, बल्कि लत बन चुका है। देर रात तक स्क्रीन देखने से नींद पूरी नहीं होती। आँखों में जलन, सिरदर्द और गर्दन-दर्द आम शिकायतें बन गई हैं। विद्यार्थियों की एकाग्रता घट रही है और पढ़ने की आदत छूट रही है।

आभासी दुनिया में खोए लोगों को पास बैठे परिजनों से बात करने की फ़ुरसत नहीं। यही नहीं, फ़र्ज़ी कॉल और अनजान लिंक के ज़रिए ऑनलाइन ठगी भी तेज़ी से बढ़ी है।

मेरा सुझाव है कि हर परिवार दिन में कुछ समय "मोबाइल-मुक्त" रखे और बच्चों के लिए इसकी समय-सीमा तय करे। विद्यालय भी बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षा की सीख दें।

आशा है, आप इसे प्रकाशित कर लोगों को सचेत करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 15 जुलाई 2018

परीक्षा-संकेत

प्रश्न में पत्र का प्रकार नहीं बताया गया है, इसलिए विचार-प्रधान विषयों पर संपादक के नाम पत्र सबसे उपयुक्त रहता है। औपचारिक प्रारूप (सेवा में, विषय, संबोधन, समापन) पूरा रखें और मुख्य भाग लगभग 150 शब्दों में रखें।

प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

प्रश्न 40 अंक

Draft a report in about 200 words:

आँखों देखी रेल दुर्घटना

आँखों के सामने पलटे डिब्बे, मची चीख-पुकार

कोलकाता, 14 नवंबर (निज संवाददाता)। आज सुबह हावड़ा से चली एक सवारी गाड़ी के तीन डिब्बे शहर से लगभग पचास किलोमीटर दूर पटरी से उतरकर पलट गए। यह संवाददाता उसी गाड़ी के पिछले हिस्से में सफ़र कर रहा था।

लगभग साढ़े आठ बजे गाड़ी पूरी रफ़्तार में थी कि अचानक ज़ोर का झटका लगा और कानफाड़ू आवाज़ के साथ गाड़ी रुक गई। नीचे उतरकर देखा, तो आगे के तीनों डिब्बे लुढ़ककर खेतों में जा पड़े थे। चारों ओर चीख-पुकार मची थी। कोई टूटी खिड़की से निकलने की कोशिश कर रहा था, तो कोई बिछड़े परिजनों को पुकार रहा था।

सबसे पहले आसपास के गाँवों के लोग मदद को दौड़े और घायलों को डिब्बों से निकाला। लगभग एक घंटे बाद रेलवे की राहत गाड़ी, पुलिस और एंबुलेंस मौक़े पर पहुँचीं। गंभीर घायलों को ज़िला अस्पताल भेजा गया। शुरुआती जानकारी के अनुसार कुछ यात्रियों की मौत भी हुई है।

रेलवे ने दुर्घटना की जाँच के आदेश दे दिए हैं और मृतकों के परिजनों व घायलों के लिए मुआवज़े की घोषणा की है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि यहाँ पटरी की मरम्मत बरसों से नहीं हुई थी। देर शाम तक इस मार्ग पर रेल-यातायात बहाल नहीं हो सका।

परीक्षा-संकेत

"आँखों देखी" विषय में संवाददाता को घटना का प्रत्यक्षदर्शी दिखाएँ, पर भाषा समाचार की ही रखें। क्रम यह रहे: शीर्षक, दिनांक-पंक्ति, घटना का आँखों देखा ब्योरा, राहत-कार्य, और अंत में जाँच, मुआवज़े तथा यातायात की स्थिति।

प्रश्न 3 · सार-लेखन

प्रश्न 40 अंक

Write a précis of the following passage in Hindi (Use the special sheet provided for the purpose):

मानव के विभिन्न मनोविकारों में क्रोध का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस मनोविकार के कारण मनुष्य अपने स्वरूप को त्याग कर दानव हो जाता है। क्रोध के प्रभाव से उसके चेहरे का रूप और उसके हाव-भाव बदल जाते हैं। क्रोध के लक्षणों में लाल आँखें, आरक्त चेहरा, दृढ़ता से सटे ओठ तथा फूले हुए कपोल हो सकते हैं। कभी कभी मनोविकार में दाँत भी भिंच जाते हैं। वाणी में रूखापन और कठोरता आ जाती है। इस अवस्था में उसके सामने दर्पण ले जाने पर वह अपने भयानक चेहरे तथा उसके भावों के कारण खुद को ही नहीं पहचान पाएगा। क्रोध के कारण मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है, जिसका प्रभाव उसकी चिंतन शक्ति पर पड़ता है। चिंतन शक्ति का विकास जहाँ व्यक्ति को प्रगति के मार्ग की ओर अग्रसर करता है, वहीं क्रोध उसके कार्य की प्रगति को अवरुद्ध कर देता है। इस विकार के कारण व्यक्ति अपनी तथा दूसरे दोनों की दृष्टि में गिर जाता है। ऐसा व्यक्ति कुछ-कुछ सनकी, हठी और अहंकारी हो जाता है। उसमें दूसरे के प्रति करुणा और सहानुभूति की भावना नहीं रहती। समाज में उसे कोई सम्मान नहीं मिलता और मिलता भी है तो उसमें अपनत्व की भावना नहीं रहती। कई बार क्रोध में आपा खोकर व्यक्ति अनर्थ भी कर बैठता है। अतः सभी विद्वान, समझदार तथा सहानुभूति से पूर्ण व्यक्ति हमेशा यही शिक्षा देते हैं – कि इस हानिकारक विकार से बचने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि क्रोध अक्सर हमारे लिए अभिशाप बन जाता है, वरदान नहीं।

टिप्पणी

छपाई की कुछ भूलें सुधारकर पढ़ी गई हैं: "घाव-भाव" को "हाव-भाव", "क्रौध के लक्षणों" को "क्रोध के लक्षणों", "लाल आँखे" को "लाल आँखें", "फुले हुए" को "फूले हुए", "हो सकतें हैं" को "हो सकते हैं", "रुखापन" को "रूखापन" और "दोनो" को "दोनों"।

शीर्षक: क्रोध – एक घातक मनोविकार

मनोविकारों में क्रोध का विशेष स्थान है; यह मनुष्य को दानव बना देता है। इससे उसका चेहरा और हाव-भाव भयानक हो उठते हैं और वाणी कठोर हो जाती है। क्रोध से विवेक नष्ट होता है, चिंतन-शक्ति कुंठित होती है और प्रगति रुक जाती है। क्रोधी व्यक्ति हठी, अहंकारी और संवेदनहीन होकर अपनी और दूसरों की नज़रों में गिर जाता है, समाज में सच्चा सम्मान खो देता है और कभी-कभी अनर्थ भी कर बैठता है। इसलिए क्रोध से बचना ही उचित है, क्योंकि यह वरदान नहीं, अभिशाप है।

(मूल गद्यांश: लगभग 245 शब्द; सार: लगभग 85 शब्द)

परीक्षा-संकेत

क्रोध के शारीरिक लक्षणों (लाल आँखें, भिंचे दाँत, फूले कपोल) की सूची सार में न दोहराएँ; "चेहरा भयानक हो उठता है" जैसे एक वाक्य में समेट दें। अंतिम उपदेश को निष्कर्ष के रूप में रखें।

प्रश्न 4 · निबंध

प्रश्न 40 अंक

Write a composition on the following topic:

भ्रष्टाचार का सामाजिक जीवन पर प्रभाव (भ्रष्टाचार का अर्थ.....भ्रष्टाचार के रूप: रिश्वत, कामचोरी, मिलावट, मुनाफाखोरी, भाई-भतीजावाद, कालाबाजारी, जमाखोरी आदि..... भ्रष्टाचार के कारण..... भ्रष्टाचार का समाज पर प्रभाव..... भ्रष्टाचार की समस्या से मुक्त होने के रास्ते)

भ्रष्टाचार का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

भूमिका

किसी भी समाज की असली ताकत उसके लोगों की ईमानदारी और आपसी भरोसे में होती है। यह भरोसा टूटने लगे, तो सबसे मज़बूत व्यवस्था भी भीतर से खोखली हो जाती है। आज देश के सामने खड़ी चुनौतियों में भ्रष्टाचार सबसे प्रमुख है। यह दीमक की तरह चुपचाप समाज की जड़ों को खा रहा है।

भ्रष्टाचार का अर्थ

"भ्रष्टाचार" दो शब्दों से बना है – "भ्रष्ट" और "आचार", अर्थात् बिगड़ा हुआ आचरण। जब कोई व्यक्ति अपने पद, अधिकार या अवसर का उपयोग नियम और नैतिकता को ताक पर रखकर निजी स्वार्थ के लिए करता है, तो वह भ्रष्टाचार है। यह केवल रिश्वत के लेन-देन तक सीमित नहीं; कर्तव्य और ईमानदारी के विरुद्ध किया गया हर आचरण इसी के दायरे में आता है।

भ्रष्टाचार के रूप

अनेक सरकारी दफ़्तरों में बिना रिश्वत के फ़ाइल आगे नहीं बढ़ती। कई कर्मचारी दफ़्तर में बैठकर भी काम से जी चुराते हैं; यही कामचोरी है। कुछ व्यापारी दूध, घी, मसालों और दवाइयों तक में मिलावट करते हैं। त्योहारों या संकट के समय मुनाफ़ाखोरी और जमाखोरी से कीमतें आसमान छूने लगती हैं, और कालाबाज़ारी ज़रूरी चीज़ों को आम आदमी की पहुँच से बाहर कर देती है। नौकरियों और ठेकों में योग्यता की जगह भाई-भतीजावाद चलता है।

भ्रष्टाचार के कारण

इसका सबसे बड़ा कारण बढ़ता भौतिकवाद और रातोंरात अमीर बनने की लालसा है। समाज ने धन को ही प्रतिष्ठा का पैमाना मान लिया है। जटिल सरकारी प्रक्रियाएँ, कामकाज में पारदर्शिता की कमी, धीमी न्याय-व्यवस्था और दोषियों को समय पर सज़ा न मिलना भी इसे बढ़ावा देते हैं। चुनावों में होने वाला बेहिसाब ख़र्च राजनीति को दूषित करता है। साथ ही नैतिक शिक्षा की उपेक्षा और "सब चलता है" की मानसिकता ने इसे एक तरह की सामाजिक स्वीकृति दे दी है।

भ्रष्टाचार का समाज पर प्रभाव

भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी मार गरीब और ईमानदार नागरिक पर पड़ती है। विकास के लिए आया पैसा बीच में ही हड़प लिया जाता है, जिससे सड़कें, पुल और अस्पताल अधूरे या कमज़ोर बनते हैं। मिलावटी खाने-पीने की चीज़ें और नक़ली दवाएँ लोगों की सेहत से खिलवाड़ करती हैं। भाई-भतीजावाद के कारण योग्य युवा पीछे छूट जाते हैं और उनके मन में निराशा घर कर लेती है। अमीर और

गरीब की खाई चौड़ी होती जाती है, कानून का सम्मान घटता है और व्यवस्था पर से लोगों का भरोसा उठने लगता है। धीरे-धीरे ईमानदारी को मूर्खता समझा जाने लगता है, जो किसी भी समाज के नैतिक पतन का संकेत है।

भ्रष्टाचार की समस्या से मुक्त होने के रास्ते

इस समस्या से निपटने के लिए कड़े कानून ही नहीं, उनका ईमानदार पालन भी ज़रूरी है। सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन और पारदर्शी बनाकर बिचौलियों की भूमिका ख़त्म की जा सकती है। सूचना के अधिकार और भ्रष्टाचार-निरोधक संस्थाओं को मज़बूत किया जाए, और ऐसे मामलों का फ़ैसला जल्दी हो। चुनाव-सुधार और भ्रष्टाचार उजागर करने वालों की सुरक्षा भी आवश्यक है। पर सबसे ज़रूरी है नैतिक जागरण। परिवार और विद्यालय बच्चों में ईमानदारी के संस्कार डालें, और हर नागरिक यह संकल्प ले कि वह न रिश्वत लेगा, न देगा।

उपसंहार

भ्रष्टाचार केवल कानून की समस्या नहीं, हमारे चरित्र की भी परीक्षा है। जब तक समाज स्वयं इसका बहिष्कार नहीं करेगा, कोई कानून इसे जड़ से नहीं मिटा सकता। ईमानदार नागरिक ही ईमानदार व्यवस्था की नींव रखते हैं। यदि हम सब मिलकर यह ज़िम्मेदारी निभाएँ, तो एक स्वच्छ, न्यायपूर्ण और समृद्ध भारत का सपना अवश्य साकार होगा।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रश्न में दी गई रूपरेखा के हर बिंदु को अलग शीर्षक दें और उसी क्रम में लिखें; परीक्षक सबसे पहले यही देखता है। "भ्रष्टाचार के रूप" में दिए गए सभी उदाहरणों (रिश्वत, कामचोरी, मिलावट आदि) का उल्लेख अवश्य करें।

प्रश्न 5 · अनुवाद

प्रश्न 40 अंक

Translate into Hindi:

One day Sir Isaac Newton went out of his room leaving on the table a heap of papers containing his long research on the theory of light. There was on the floor of the room lying his pet dog, Diamond. No sooner had he gone than the dog jumped upon the table and upturned the lighted candle and the papers immediately caught fire. Returning after a few minutes Newton found that all his hard labour of twenty years had been reduced to ashes. But the great scientist patted the dog on the head exclaiming, "Oh; Diamond, you don't know what you have done!"

एक दिन सर आइज़क न्यूटन मेज़ पर काग़ज़ों का एक ढेर छोड़कर अपने कमरे से बाहर चले गए। इन काग़ज़ों में प्रकाश के सिद्धांत पर किया गया उनका लंबा शोध-कार्य दर्ज था। कमरे के फ़र्श पर उनका पालतू कुत्ता डायमंड लेटा हुआ था। उनके बाहर जाते ही कुत्ता उछलकर मेज़ पर चढ़ गया और उसने जलती हुई मोमबत्ती गिरा दी। काग़ज़ों ने तुरंत आग पकड़ ली। कुछ मिनट बाद लौटकर न्यूटन ने देखा कि उनकी बीस वर्षों की सारी कड़ी मेहनत जलकर राख हो चुकी है। लेकिन वे महान वैज्ञानिक कुत्ते का सिर थपथपाते हुए बोल उठे, "ओह डायमंड, तुम नहीं जानते कि तुमने क्या कर डाला है!"

परीक्षा-संकेत

"No sooner had he gone than" का शाब्दिक अनुवाद न करें; "उनके बाहर जाते ही" सहज हिंदी है। "reduced to ashes" के लिए "जलकर राख हो चुकी है" और "patted the dog on the head exclaiming" के लिए "कुत्ते का सिर थपथपाते हुए बोल उठे" लिखा गया है। लंबे अंग्रेज़ी वाक्य को दो हिंदी वाक्यों में तोड़ना ठीक है।